



वर्ष 44 अंक: 6 20.12.2021 सोमवार (नवंबर-दिसंबर) वार्षिक शुल्क: ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये



निष्ठात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयाविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्णध्या भक्तिः कृष्णस्य सधर्दा ॥ शिक्षायत्री, ११५
महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

7 अक्टुबर 2021



प.पू. दीदी के वरद हस्तीं पू. आनंद, पू. सर्जन एवं पू. योगी का पूजन



दिल्ली के स्थानिक मुक्तीं द्वारा पूजन



15 अक्टूबर 2021 दशहरा-पू. सुहृदस्वामीजी के जन्मीत्सव पर



सेवक पू. आनंद, पू. सर्जन एवं पू. योगी का विदाई समारोह



15 अक्टूबर 2021 रात्रि – प.पू. दिनकर दादा का आगमन...



सुस्वागतम् प.पू. दिनकर अंकल!



18 अक्टुबर 2021 सायं



संतभगवंत साहेबजी का अभिनंदन



गुणातीत समाज के हम सब मिल कर दीक्षा विधि संपन्न करेंगे

— प.पू. गुरुजी



प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई का अभिवादन



18 अक्टुबर 2021 रात्रि



उत्तराधिकारी दिये स्वामी ने हरिधाम के





सखा गुरुजी के न्यारे रे, सुहृद प्रेमस्वामी



माला के तेरे मनके बनें, अब जीवन का ये निशान है इसी रंग में ख़ाक हो जायें, भगवा ही मेरी शान है...

गुरुहरि योगीजी महाराज ने जब प्रथम 51 शिक्षित युवकों को साधु की दीक्षा देने का निर्णय लिया, तब आशीर्वाद बरसाते हुए उन्होंने कहा था —

पात्र भी मैं घड़ूंगा और ब्रह्मरस भी मैं भरूंगा...

युवकों को साधु बनने के लिये प्रेरित करते हुए प.पू. पप्पाजी महाराज ने भी कहा था—

ऐसा मौका और कहाँ और कब मिलेगा ?

बापा के वचन से निकल पड़ो, फत्तेह है आगे;

बापा एक-एक को भगवान जैसा बना देंगे...

‘भगवान’ शब्द सुन या पढ़ कर सामान्यतः यही विचार आता है कि ऐसा ऐश्वर्य-शक्ति प्राप्त हो जाये, जिससे कि सभी लौकिक-अलौकिक मनोरथ पूरे करने की क्षमता आ जाये या रिद्धि-सिद्धि के प्रताप से लाखों को अपने वश करने की ताक़त मिल जाये वगैरह-वगैरह...

गुरुहरि पप्पाजी के कहने का तात्पर्य तो यह था कि प.पू. योगीबापा इन दीक्षितों को साधुता के आभूषणों से सुसज्जित करके, अक्षरधाम के सुख की प्राप्ति सहज करवा देंगे; जिसकी खोज में कई योगी-तपस्वी हिमालय के जंगलों में कठोर तपस्या करते हैं। जगत में लोग तप, ध्यान, दान इत्यादि करते हैं। जबकि गुणातीतभाव को पाये संत तो सिर्फ अपने संसर्ग में उन्हें हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, तृष्णा, महत्त्वाकांक्षा व क्रोध से निर्मूल कर देंगे।

हमारा सौभाग्य है कि ऐसी गुणातीत स्थिति को पाये संतों की निश्चा हमें मिली।

हाल ही में प.पू. बापा द्वारा दीक्षित और प.पू. काकाजी से ‘गुणातीत ज्ञान का कसब’ सीखे प.पू. गुरुजी ने अपनी नारायणी सेना में मंदिर के तीन सेवक पू. आनंद, पू. सर्जन और पू. योगी को भागवती दीक्षा देने हेतु, 19 अक्टूबर 2021 की सुबह पार्षदी दीक्षा और 20 अक्टूबर शरदपूर्णिमा — मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्य दिन पर भागवती दीक्षा देने का निर्णय लिया।

अब तक प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी गुणातीत समाज में संतों को दीक्षा देते आये। परंतु,

26 जुलाई 2021 को प.पू. स्वामीजी स्थूल रूप से नयन अगोचर हुए! सो, यह प्रथम

अवसर था कि दिल्ली मंदिर में प.पू. गुरुजी द्वारा साधु की दीक्षा देने का कार्य आरंभ



हो रहा था। बड़ों को ही हमेशा आगे रख कर, साथी-मुक्तों की हूँफ में किसी भी कार्य को करने वाले, प.पू. गुरुजी ने सर्वप्रथम **संतभगवंत साहेबजी** से विनती की कि आप इस अवसर पर दिल्ली आयें और गुणातीत समाज के हम सभी मिल कर दीक्षा विधि संपन्न करें। **संतभगवंत साहेबजी** का भी प.पू. गुरुजी के प्रति ऐसा अप्रतिम प्रेम कि अपने स्वास्थ्य और कोविड की पाबंदी की परवाह न करते हुए, दिल्ली आने के लिये उन्होंने तुरंत 'हाँ' कर दी।

और... परिपत्र द्वारा गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में दीक्षा विधि का बिगुल बजने पर— अनुपम मिशन से **संतभगवंत साहेबजी-प.पू. शांतिभाई साहेब** चार-पाँच मुक्तों के संग, ऋषिकेश में ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की अस्थियों का विसर्जन करने हेतु हरिधाम से आये **प.पू. प्रेमस्वामीजी** करीब 40 संतों एवं सहिष्णु भाइयों के संग, समढियाळा से **प.पू. निर्मलस्वामीजी**, शिकागो से **प.पू. दिनकर अंकल** करीब आठ-दस मुक्तों के संग, मुंबई से **प.पू. भरतभाई**, **प.पू. वशीभाई**, **प.पू. माधुरी बहन** करीब 25 मुक्तों के संग, सांकरदा से **प.पू. बापुस्वामीजी-पू. स्नेहलस्वामीजी**, कंथारिया से **पू. विज्ञानस्वामीजी-पू. आचार्यस्वामीजी**, गुणातीत ज्योत से **पू. इलेशभाई** और... **प.पू. हंसा दीदी** की तबियत नासाज़ होने के कारण, उनकी ओर से **प.पू. माया बहन**, **पू. डॉ. नीलम बहन**, लंदन के **पू. किशोरभाई मास्टर्स**, पेरिस के **पू. प्रवीणभाई लाड**— यूँ, देश-विदेश के अन्य कई मुक्त भी दिल्ली मंदिर आये।

बाहर के तकरीबन 200 मुक्तों के आने की संभावना लगने पर, कोविड की पाबंदी को ध्यान में रखते हुए स्थानीय मुक्तों से प्रार्थना की कि वे 7 व 15 अक्टुबर-दशहरा **पू. सुहृदस्वामीजी के जन्मदिन** पर मंदिर आकर दीक्षार्थियों का पूजन कर लें और दीक्षा विधि का ऑनलाइन दर्शन घर पर करें।

दिल्ली के स्थानिक मुक्तों को अंतर से धन्यवाद कि प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करते हुए किसी ने भी उत्सव के दौरान मंदिर आने का आग्रह नहीं किया।

फलस्वरूप सीमित मुक्तों की हाज़िरी में दीक्षा विधि का कार्यक्रम सुचारु रूप से संपन्न हुआ। करीब दो साल बाद, यह प्रथम उत्सव था कि गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के आत्मीय स्वजन एक साथ उपस्थित हुए।



बीते दिन लौट आने की खुशी ज़ाहिर करते हुए, प.पू. गुरुजी ने स्वयं सबके माहात्म्य का दर्शन कराया। उन्होंने आज्ञा दी कि स्वरूपों के आगमन पर लाल गलीचा बिछा कर, वेलकम के बैनर और रंग-बिरंगे गुब्बारे लेकर मंदिर के द्वार पर सभी खड़े रहें। दीयों से जगमगाहट करें और तीनों दीक्षार्थी आरती करके अभिनंदन करें। इतना ही नहीं प.पू. गुरुजी ने स्वयं आरती द्वारा स्वरूपों का स्वागत किया।

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के अंतर्धान होने के बाद हरिधाम के **उत्तराधिकारी के रूप में प.पू. प्रेमस्वामीजी** ने ऋषिकेश में प.पू. स्वामीजी की अस्थियों का विसर्जन करके 18 अक्टूबर की देर रात्रि को जब दिल्ली मंदिर में प्रवेश किया, तो फूलों की वर्षा, दीयों-आतिशबाजी और आरती से प.पू. गुरुजी ने उनका **भव्य अभिवादन** करवाया। उपस्थित मुक्तों ने भंगड़ा करके अपना भाव व्यक्त किया।

19 अक्टूबर 2021 की सुबह नौ बजे मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में सभी एकत्र हुए। वहाँ **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की कृपादृष्टि का पात्र और भारत का राष्ट्रीय पक्षी 'मोर' का डेकोरेशन** था। श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के सिंहासन के बीच में **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** की बड़ी मूर्ति सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। ऐसा लगता था कि स्वामी साक्षात् विराजमान होकर आशीर्वाद दे रहे हैं।

स्वामी की मूर्ति के समक्ष हाथ में जनेऊ लिये तीन दीक्षार्थियों के कट्आउट रखे थे, जो प्रत्यक्ष स्वरूपों से प्रार्थना कर रहे थे—

हम ऐसे निष्कामी हों, ताकि आपकी कृपा-दृष्टि हम पर बनी रहे...

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के अक्षरधामगमन के बाद प.पू. प्रेमस्वामीजी ने तुरंत सर्व सम्मति से अब हरिधाम मंदिर की बागडोर संभाली थी; सो एक सप्ताह पूर्व प.पू. गुरुजी ने **पू. राकेशभाई व पू. डॉ. दिव्यांग** से 'तारा मुखनी लावणता मीठी रे...' राग पर **प.पू. प्रेमस्वामीजी** के लिये निम्न **भजन** बनवाया था।

महापूजा के आरंभ होने के थोड़ी देर बाद **पू. डॉ. दिव्यांग** ने वह प्रस्तुत किया—

जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि, शूरवीर प्रेमस्वामी,

उनकी साधुता काकाजी को भाती रे, सरल प्रेमस्वामी,

जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि, शूरवीर प्रेमस्वामी...

कोठारीस्वामी संग जोड़ अनूठी, -2



आँखों के तारे दोनों हरि के, मूरत सुखकारी...
जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि, शूरवीर प्रेमस्वामी...
आत्मीयता और प्रेम के सागर, -2
दास के दास बन जीते जो, हरि जायें बलिहारी...
जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि, शूरवीर प्रेमस्वामी...

उत्तराधिकारी दिये स्वामी ने हरिधाम के, -2

सखा गुरुजी के न्यारे रे, सुहृद् हितकारी...
जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि, शूरवीर प्रेमस्वामी,
उनकी साधुता काकाजी को भाती रे, सरल प्रेमस्वामी,
जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि, शूरवीर प्रेमस्वामी...

भजन के तुरंत बाद **संतभगवंत साहेबजी** ने सभी केन्द्रों के प्रतिनिधियों द्वारा **प.पू. प्रेमस्वामीजी** को हार अर्पण करवाया।

तत्पश्चात् तालियों की गूंज से श्वेत धोती धारण किये दीक्षार्थियों का सभी ने स्वागत किया। स्वरूपों को प्रणाम करके तीनों दीक्षार्थी महापूजा में बैठे। श्री ठाकुरजी को नैवेद्य धराने के बाद **पू. राकेशभाई** ने **प.भ. समीरभाई** और उनकी धर्मपत्नी **सौ. तृप्ति भाभी** की निम्न भावना को व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद किया—

**गढडा अंत्य प्रकरण 21 के वचनामृत की बात प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं—
प्रगट की दृढ़ निष्ठा वाले सत्संगी वैष्णव ही हमारे सगे-संबंधी हैं, वही हमारी नात है और
जीतेजी ऐसे वैष्णव के संग रहना है...**

प.पू. गुरुजी की इस बात को अंतर से मानते हुए, **प.भ. समीरभाई और सौ. तृप्तिभाभी ने अपने सुपुत्र पू. आनंद के साधु की दीक्षा प्रसंग निमित्त मंदिर के संतों, सेवकों एवं बहनों के लिये कपड़ों की भेंट दी है।**

तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** ने पहले दीक्षार्थियों के माता-पिता को और फिर दीक्षार्थियों को संकल्प कराया और **गुरुहरि काकाजी के ज़रिये** इन पार्षदों की जिम्मेदारी लेते हुए **प.पू. गुरुजी** ने भी प्रतिज्ञा-संकल्प किया।

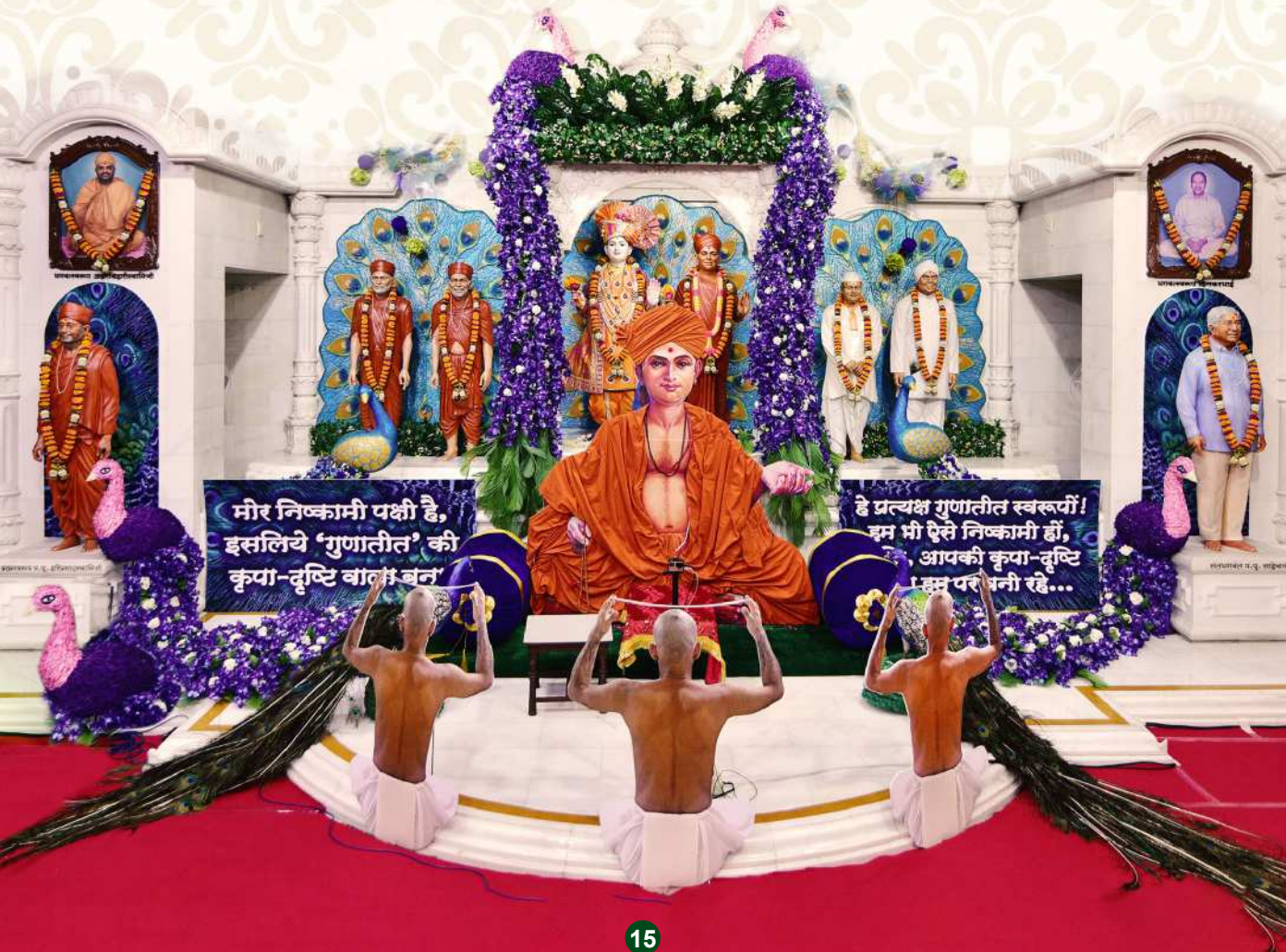
दीक्षाविधि के कार्यक्रम के अंतर्गत तीनों दीक्षार्थियों ने स्वरूपों एवं वडील संतों के वरद हस्तों से—जनेऊ, कंठी, कलावा, गातरिया-गुरुमंत्र, पाघ एवं पूजा प्राप्त करके आरती की व दंडवत् प्रणाम किया।



19 अक्टुबर 2021 सुबह



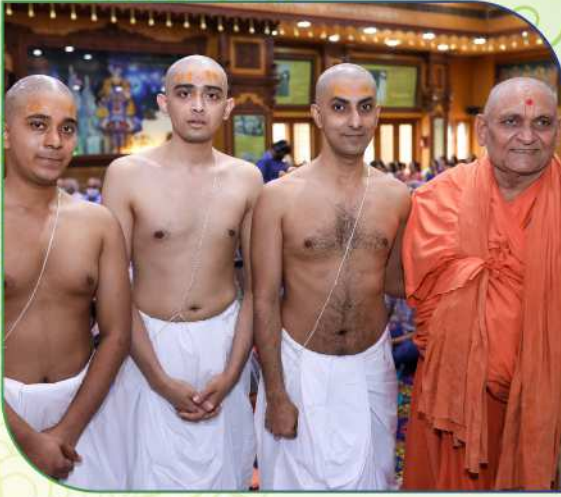
सेवक पू. आनंद, पू. सर्जन एवं पू. योगी की पार्वदी दीक्षा का शुभारंभ



हरिप्रसादस्वामीजी के भौतिक देह त्याग के बाद गुणातीत समाज में प्रथम दीक्षा विधि - संतभगवंत साहेबजी



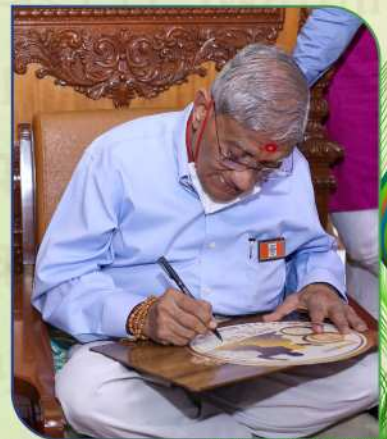
गुणातीत से दीक्षा पाकर गुणातीत हो जायेंगे...



भावात्मक एकता से जियें, तभी तुम्हें हम भायेंगे...



प.पू. दिनकर अंकल द्वारा 2022 में 'साधु पर्व' के रूप में
प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्योत्सव का जयघोष...



19 અવતુબર 2021 સાચં – સભા



લાગે વૈકુંઠથી રુડુ વડતાલ...



पू. प्रभाकरजी, पू. प्रवीणभाई लाड (पेरिस) एवं पू. किशोरभाई मास्टर्स (लंदन) ने सभी की ओर से दीक्षार्थियों को हार पहना कर अभिवादन किया।

फिर मंत्रपुष्पांजलि करके **पू. मैत्रीस्वामी** ने महापूजा विधि संपन्न की।

पू. डॉ. दिव्यांग द्वारा 'तुझसे रखे ना कोई मन की चोरी...' भजन प्रस्तुत किये जाने के बाद, दिल्ली मंदिर के आत्मीय स्वजन **पू. आई.एम.गर्ग साहेब** ने प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए कहा—

...सन् 2012 में पहली बार गुरुजी सबको लेकर हमारे होटल मसूरी गए थे। वहाँ से हम इनके साथ जुड़े हैं। मैं सनातन धर्मी हूँ और यह भी सनातन धर्म का एक पक्ष ही है। अब तक प्रार्थना करने का कोई सरल तरीका हमें नहीं आता था। पर, अब सुबह जैसे ही हम उठते हैं तो — 'स्वामिनारायण' धुन करते हैं। गुरुजी के प्रताप और धुन से हमारे मन को बहुत ज्यादा शांति मिली है...

मेरा आर्किटेक्ट का प्रोफेशन है। ऑफिस कनॉट प्लेस में है, तो कॉन्ट्रेक्टर और बिल्डर्स के साथ रोज़ शाम को मीटिंग्स होने पर खाना-पीना चलता। हम भी खाते-पीते थे। लेकिन एक कमाल ये हुआ कि जब से गुरुजी की संगत हुई है, इनकी शरण में आए हैं, उस दिन से लेकर आज तक न कोई नॉनवेज और न कोई लीकर को हाथ लगाते हैं। मैं गुरुजी की ये स्पेशियल कृपा समझता हूँ, जो आप सब पर भी बनी हुई होगी...

तत्पश्चात् **प.पू. प्रेमस्वामीजी** ने पार्षदों को आशीर्वाद देते हुए कहा —

...कल दिनकरभाई के साथ सब संतों ने गंगाजी में स्वामीजी की दिव्य अस्थियों का विसर्जन किया। दिनकरभाई ने बहुत अच्छे आशीर्वाद दिए। सबको बहुत आनंद कराया। सब संत भी बहुत खुश हो गए। आज शरदपूर्णिमा है, स्वामीजी महाराज ने आज के दिन योगीबापा से भागवती दीक्षा ग्रहण की थी। आज जब नए पार्षद को दीक्षा दी जा रही है, तो बापा की वो सारी पुरानी स्मृतियाँ मन में चल रही थीं। दशहरे के दिन गोंडली घाट पर स्वामीजी का मुंडन हो रहा था। काकाजी भी पधारे थे, साहेबजी भी हाज़िर थे। उस समय बहुत बड़ा समाज साथ में था। मुझे वो सब याद आता है... वो पूरा सीन हृदय में चल रहा था। गुरुजी ने पार्षदों को दीक्षा दी, तो मुझे बहुत खुशी है कि हमारी जमात बढ़ रही है। पार्षदों से विनती है कि चिंता मत करना।

जो दीक्षा दे रहे हैं, वे हमारी चिंता करने वाले हैं। साहेबजी और गुरुजी पूरी तरह से हमारी चिंता करेंगे। **बापा** ने मुझे कहा था—

कोई सोने का मंदिर मुझे दे, तो मैं खुश नहीं होता हूँ। लेकिन दो हाथ जोड़ कर मुझसे कहे— मुझे आपको राज़ी करना है, तो मैं बहुत राज़ी होता हूँ।



तो, बापा से मैंने कहा कि आपके पास में इसलिए ही आया हूँ।

आज करीब 57 साल हुए, लेकिन पता ही नहीं चला कि इतने साल कैसे चले गये। ऐसे ही आप लोगों का होगा। किसी भी प्रकार की चिंता मत करना, क्योंकि जो सत्पुरुष हमें मिले हैं उनमें भगवान स्वामिनारायण नख से सिर तक प्रगट हैं।

संत तो बहुत होते हैं और हैं, लेकिन गुरुकृपा से इन्होंने भगवान को प्रगट किया है।

योगी बापा और काकाजी के पास गुरुजी ने कैसा जीवन जीया है, वो मैंने देखा है।

इनके कहे अनुसार अगर हम अपना जीवन बनाएंगे, तो पता नहीं चलेगा; हम इनके जैसे बन जाएंगे। वे जो सुख ले रहे हैं, वो हमें मिलेगा। एक ही कंडीशन है कि —

दूसरों की ओर देखना नहीं है। अपना साथीदार क्या कर रहा है, उस तरफ निगाह नहीं डालनी।

हमारी निगाह केवल अपनी आत्मा और गुरुजी की ओर रखनी। सत्संग बहुत होता है और होता रहेगा। **गुरुजी** के जीवन में मैंने देखा है कि इन्होंने कभी भी किसी प्रकार की चिंता नहीं की है।

इनकी नज़र हमेशा योगी बापा और अपनी आत्मा की ओर थी। बापा के स्वधाम जाने के बाद काकाजी की ओर थी। इन्होंने कहीं और देखा ही नहीं।

अभी तो बहुत अच्छा है, पर इन्हें जब दिल्ली भेजा, तब उस समय जो हालात थे, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। आपको तो किसी भी प्रकार का भीड़ा पड़ने वाला नहीं है। मन के साथ तय करना है कि हमें कहीं किसी की ओर नहीं देखना है। सिर्फ इनकी ओर देखना है। भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, स्वामीजी महाराज, संतभगवंत साहेबजी और गुरुजी के चरणों में इतनी प्रार्थना है कि आप इतनी कृपा करना कि ऐसा बुद्धियोग हम सबको मिले और हमारे जो ये तीन भाई बढ़ रहे हैं, उसकी हमें बहुत खुशी है, हृदय में आनंद समाता नहीं है।

आपने जो विश्वास किया है, वो सही जगह पर किया है। इसी विश्वास को पकड़ कर चलते रहना...

प.पू. प्रेमस्वामीजी की माहात्म्य वाणी सुनने के बाद **प.पू. निर्मलस्वामीजी** ने गुजराती में निम्न भावना व्यक्त की—

हैयामां हेत उभराणा, सुणी प्रेमस्वरूपी वाणी,
निर्मल कहे दिलथी छूटी, प्रेमसरवाणी,
मळया सेवकने गुरु प्रेमस्वरूप, आप्या आशीर्वाद,
निर्मल माथे वरस्यो, करुणानो वरसाद...



तीन सेवकों को साधु की दीक्षा देने हेतु सभी केन्द्रों से स्वरूप, वडील संत एवं मुक्त यूँ एकत्र हुए और... प्रभु ने आगामी ऐतिहासिक वर्ष का जयघोष करने का मौका दिया, जब **प.पू. गुरुजी 85 वर्ष पूर्ण करेंगे।**

इस उत्सव के प्रतीक चिन्ह एवं नाम का **पू. राकेशभाई** ने निम्न विवरण दिया —

1967 में गुरुहरि काकाजी ने प.पू. गुरुजी को उत्तरभारत में स्वामिनारायण का संदेश फैलाने के लिये दिल्ली जाने की आज्ञा की। तब **वडोदरा में प.भ. भीखाकाका** के घर पर प.पू. गुरुजी व संतों का विदाई समारोह आयोजित हुआ था। वहाँ **गुरुहरि काकाजी ने प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद देते हुए कहा था—**

स्वामिनारायण का संदेश फैलाने के लिए तुम्हें **दिल्ली** भेजने का मैंने पक्का किया है।

यह मत समझना कि यह मेरी कोई इच्छा है और मैं तुम्हें भेज रहा हूँ।

बापा का संकल्प है और तुम्हें जाना है।

जब नंदाजी 1948 में दिल्ली जा रहे थे, तब शास्त्रीजी महाराज ने अपने और योगीजी महाराज के बीच उन्हें बिठा कर महाराज की मूर्ति देते हुए आशीर्वाद दिया था कि दिल्ली जाओ, स्वामिनारायण का संदेश फैलाओ।

दिल्ली की गद्दी पर बैठोगे और महाराज जैसा मेरा सुनते हैं, वैसा तुम्हारा सुनेंगे...

वो आशीर्वाद अब हमें आत्मसात् करने हैं। वहाँ बापा ही सब काम करेंगे। आगे-पीछे सारी व्यवस्था कर देंगे। तुम्हें तो निमित्त ही बनना है।

अभिप्राय की इस भक्ति के फलस्वरूप मुकुंद! तुम में ऐसी अद्भुत साधुता प्रगटेगी कि सत्संग तुम्हारे आस-पास सहज ही बढ़ता जाएगा। तुम्हारे सान्निध्य में सभी को सहज ही शांति-आनंद और प्रेम का अनुभव होता जाएगा। ऐसा बापा तुम्हें बनाएंगे।

वाकई, **दिल्ली-उत्तरभारत में आत्मबुद्धि व प्रीति से जुड़ा जो सत्संग समाज आज दिखाई देता है, वह हम सबके प्रति प.पू. गुरुजी के निरपेक्ष प्रेम और उनकी अद्भुत साधुता की फलश्रुति है।**

इसलिये साधु गुणों से युक्त ऐसे **प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्योत्सव का नाम 'साधु पर्व'** निर्धारित किया है।

2022 में संजोगों के मुताबिक **'साधु पर्व'** मना कर भक्ति अदा करेंगे।

प.पू. गुरुजी के मुख से अकसर सुना है—



यदि गुणातीतानंदस्वामीजी धरती पर नहीं आये होते, तो सच्ची साधुता का कसब कौन सिखाता? सो, जैसे कि डॅकोरेशन में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की बहुत बड़ी मूर्ति विराजमान थी, तो उनकी पाघ में उत्सव का प्रतीक चिन्ह रख कर प्रार्थना की थी कि आपने अपने संतों की निश्रा हमें मौज में दी, तो हम उनसे सच्ची साधुता का कसब सीखें। **प.पू. दिनकर अंकल** ने इस चिन्ह का उद्घाटन किया। सभी स्वरूपों व वडील संतों ने प्रतीक चिन्ह खूब बारीकी से निहारा। **संतभगवंत साहेबजी** प.पू. दीदी को यह चिन्ह देने के लिये बहनों के क्षेत्र में आये। वहाँ प.पू. दीदी के प्रार्थना करने पर संतभगवंत साहेबजी ने प्रतीक चिन्ह पर हस्ताक्षर करते हुए लिखा—

जय स्वामिनारायण... गुरुजी की जय हो।

इसके द्वारा मानो उन्होंने वचन दिया कि 'साधु पर्व' पर सभी को आशीर्वाद देने के लिये वे अवश्य पधारेंगे।

तत्पश्चात् साधु पर्व पर **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की ओर से** आशीष देने आने के लिये **प.पू. प्रेमस्वामीजी** ने लिखा —

जय श्री स्वामिनारायण... हरिधाम से स्वामीजी के साथ संतगण आयेंगे। गुरुजी का जय जयकार...

प.पू. दिनकर अंकल ने प्रार्थना रूप लिखा —

जय स्वामिनारायण... आपको राजी कर सकें, ऐसा आप ही मार्गदर्शन देनाजी...

प.पू. शांतिभाई साहेब ने दासभाव से लिखा —

प.पू. गुरुजी को साहेब के दास, पू. अश्विनदास-शांतिदास एवं अनुपम मिशन से सभी के कोटि वंदन!

प.पू. भरतभाई ने आनंद व्यक्त करते हुए लिखा—

आपके साथ में सभी के साथ आनंद करें, यही अंतर की अभीप्सा... सभी संत भाइयों-भक्तों की ओर से भरत-वशी के जय स्वामिनारायण!

अंत में प.पू. गुरुजी ने **चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट** के तौर पर **प.पू. वशीभाई** को इसे सर्टीफाई करने कहा, तो उन्होंने चार्टर्ड एकाउन्टेन्सी की भाषा में लिखा—

सर्टीफाईड टु बी टू, करेक्ट एन्ड फॉर... ओ.पी. एन्ड एच.आई. वशी—

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स, दिल्ली दि. 19.10.2021

यूँ, हास्य-हास्य में दिल्ली मंदिर के सेवकों को एक ऐतिहासिक प्रसादी प्राप्त हो गई।

तत्पश्चात् **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशिष वर्षा की—



...आज बहुत दिव्य वातावरण! धाम-धामी-मुक्त ऐसे तीन संतों की पार्षदी दीक्षा में बहुत आनंददायक दर्शन हो रहा है। आज जो ये पाग पहनी है वो हमेशा के लिए हिस्ट्री में रहेगी; कल नई भगवी पाग आ जाएगी।

गुणातीतानंदस्वामी कहते हैं कि जो काम एक कल्प में भी नहीं होता था, वो एक दिन में होता है। आज तो गुरुजी की कृपा और आशीर्वाद से हम सब यहाँ इकट्ठे बैठे हैं। पर, कोरोना का भी प्रभाव है। सो, **गुरुजी से आशीर्वाद चाहते हैं कि मार्च में कोरोना भी मार्च ऑन करके भाग जाए और इधर नहीं, बल्कि बड़े हॉल में सब अच्छी तरह से गुरुजी का 'साधु पर्व' और उससे भी आगे 'साधुता पर्व' हम मनाएं।**

गुरुजी हमें जो साधुता देना चाहते हैं, वैसी साधुता हम सबके अंदर आए यही आज हमारी भावना है। दिसंबर महीने से ही सब अच्छे-अच्छे महोत्सव शुरू हो जाएंगे। **ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज** का कितना बड़ा महोत्सव होगा। फिर **संतभगवंत साहेबजी** के यहाँ नये मंदिर में **स्वर्ण कलश का महोत्सव** होगा। उससे पहले **13 जनवरी को हमारी आनंदी दीदी का भी बर्थडे** आएगा। उसके बाद **फरवरी में अक्षरविहारीस्वामीजी का प्रागट्य दिन** आएगा और फिर **मार्च में साहेबदादा और गुरुजी का प्रागट्य दिन।**

तो नये मौसम की नई सुवास लेकर नया साल शुरू होगा।

काकाजी और सब गुणातीत स्वरूप कहते हैं—

गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन हमारे लिये **'विजय दिन'** है, नया पर्व है, नया उत्साह है। तो हम सबके अंदर ऐसी एक नई शक्ति, नया आनंद आए-ऐसी साहेबदादा, प्रेमस्वरूपस्वामीजी, निर्मळस्वामीजी, बापुस्वामीजी, भरतभाई-वशीभाई सब स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है और गुरुजी से प्रार्थना करते हैं कि हमारे साथ ज़्यादा से ज़्यादा हरिभक्त आ सकें—ऐसा आप संकल्प करना-आशीर्वाद देना।

संतभगवंत साहेबजी ने पार्षदों को आशीष देते हुए कहा—

...बहुत आनंद का दिन है और प्रसंग यूनिक भी है। **हरिप्रसादस्वामीजी ने भौतिक देह का त्याग किया, उसके बाद गुणातीत समाज में यह पहली दीक्षाविधि!**

दूसरी बात, **स्वामीजी के देहत्याग के बाद पहली बार भले ही छोटे रूप में, पर 'गुणातीत समाज' की गेधरिंग हुई और प्रेमस्वामी हरिधाम के वारिसदार बने हैं और सर्वप्रथम यहाँ उनका सम्मान हुआ है।** गुरुजी के सान्निध्य में ये यूनिक उत्सव हो रहा है।

गुरुजी को समर्पित होकर आज तीन लड़कों ने साधुता के मार्ग पर चलने का निर्णय



किया। गुरुजी के साथ असाधारण प्रेम के कारण वो इनके होने जा रहे हैं। इन लड़कों को आनंद था ही। पर, इनके पिताजी समीर दवे और सुरेश सागर के मुखारविंद पर जो आनंद देखा, वो देख कर में खुश हो गया। **योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज की तपस्या कैसा रंग लाई है, वो दिखाई देता है।**

हम सब जानते हैं कि गुरुजी और हम सब बापा के साथ घूमते-फिरते थे। 1954 से बापा ने एक अलख जगाई थी कि 51 युवाओं को साधु बनाना है। युवकों को वे खूब प्रेम करते, साथ बिठाकर भोजन कराते, साथ में घुमाने ले जाते। गुरुजी अभी कैसे सीधे-सादे बैठे हैं, लेकिन बापा ने उन्हें कहा कि साधु होओगे, तो उन्होंने मना कर दिया था। राईट! **काकाजी** को भी मना कर दिया था कि आप मेरे कॉलेज के एड्मिशन में-पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट ले रहे हो, लेकिन मैं आपकी पकड़ में आने वाला नहीं हूँ। मैं साधु नहीं बनूंगा।

पूर्वाश्रम में **गुरुजी** का नाम **दीलीप** था। दीलीपभाई को **सोनाबा** के प्रति असाधारण प्रीति हो गई। वे बोलीं – गोड़िया साधु थई जा। तब वे बोले – हाँ। बा की आज्ञा से काकाजी के पास गए और साधु बन गए।

ऐसे प्रेमस्वामी हमारे साथ ही रहते थे। बापा ने मुझसे कहा – प्रफुल्ल को अपने साथ रहने के लिए ले जाना। जिस दिन उनको साधु बनाना था, उसके एक दिन पहले उन्होंने कॉलेज के लड़कों के साथ मारपीट की थी। सिर्फ मुक्का-मुक्की नहीं, हॉकी, स्टीक और साइकिल की चैन से की। ऐसे ही योगीजी महाराज ने हरिप्रसादस्वामी के साथ उन्हें साधु बनाया।

लेकिन कई माता-पिता को ज्यादा श्रद्धा नहीं थी। ऐसे कई लड़कों के माता-पिता ने साधु बनने के बाद खूब उपद्रव किया था। **योगीजी महाराज दादुकाका को आगे कर देते कि मैं साधु नहीं बनाता; ये दादुभाई बनाते हैं। यूँ बापा के लिये काकाजी ढाल बन गये थे।** शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का संकल्प था, तो 1961 में 51 संतों को दीक्षा दी। महंतस्वामीजी-वीनुभाई को 1956 में पार्षदी दीक्षा देकर भगत बनाया था। उनका लॉगेस्ट पीरियड रहा; क्योंकि 1956 के बाद 1961 में उन्हें भगवा कपड़े दिये। **हरिप्रसादस्वामीजी, प्रेमस्वामीजी** को 1965 में दशहरे के दिन श्वेत वस्त्र दिये और सिर्फ 5 दिन बाद – शरदपूर्णिमा के दिन **‘भागवती दीक्षा’** दी।

ये तीन पार्षद तो उनसे भी एडवांस हो गए! 24 घंटे में कल भागवती दीक्षा ग्रहण करेंगे। एक ही दिन में साधु बन जाएंगे। समझदारी से प्रभु की प्रसन्नतार्थ और असाधारण प्रेम से जुड़ कर भगवान के मार्ग पर आप चल रहे हो। सबको दिल से



खूब-खूब अभिनंदन और धन्यवाद। योगीजी महाराज कहते थे—

जिन माता-पिता ने अपने लड़के को प्रभु की सेवा में समर्पित किया, वे धन्य हो गये और उनकी इकहत्तर पीढ़ी का उद्धार हो गया। 1 पीढ़ी नहीं, 71 पीढ़ी! आप जैसे दर्शनीय सेवकों की माताओं और पिताओं ने राजी-खुशी से अपने लड़के को प्रभु की सेवा में सौंप दिया... पुण्यशाली आत्माएँ ही ऐसा समर्पण करती हैं। पूरा जीवन समर्पित करना कितना बड़ा समर्पण है, जो आप सबने कर दिया है।

तो एक सूत्र याद रखना, ये जो हॉल में लिखा है—**कठिनाइयों में हम अपनी सोच छोड़कर, अपनी तरफ नहीं देखें कि मुझे क्या-क्यों और कैसे हो रहा है या चल रहा है। वो छोड़ दें। बस प्रभु को ही उपायभूत होने दें।** उसके लिए ‘धुन’ हर समस्या को हल करने का एक ही उपाय है—स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण...

याद रखो, आत्मा सत्पुरुष के संबंध से ब्रह्मरूप हो गई है। **शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने जिस उपासना का प्रवर्तन किया, वो जब दुनिया को समझ में आएगी तो सब पागल हो जायेंगे।** अभी प्रेमस्वामी हरिद्वार-ऋषिकेश जाकर आए। वहाँ कितने साधु लोग हैं? आत्मा के कल्याण के लिए कितनी तपस्या-तप करते हैं, कितना योग करते हैं! उन्हें सिद्धि प्राप्त होती है, ऐश्वर्य-प्रताप-चमत्कार वो दिखाते हैं; लेकिन उनके विपरीत कुछ करो, तो वो क्रोध में बोलते हैं— तुम्हारा ऐसा हो जायेगा, वैसा हो जाएगा, श्राप देते हैं। बहुत से लोग डरते हैं कि बाबा हैं, श्राप दे देंगे। इसलिए पैर छूकर आगे चले जाते हैं। **तपस्या का परिणाम क्या आया? स्वभाव-प्रकृति का ट्रांसफॉर्मेशन होना चाहिए, वो तो हुआ नहीं!**

स्वामिनारायण भगवान मूल अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी को साथ में लेकर आए कि—मेरा ‘दर्शन’ आप नहीं कर पाओगे, मेरे पास बैठ नहीं पाओगे, मुझे पहचान नहीं पाओगे। यदि मुझे पहचानना है, मेरी सही प्रसन्नता प्राप्त करनी है, तो मैं जहाँ प्रगट हूँ ऐसे साधु के साथ जुड़ जाओ। उन्होंने ‘गुणातीत’ बताया और साथ ही बताया कि ऐसे ‘गुणातीत साधु’ के द्वारा मैं पृथ्वी पर अखंड रहूँगा। कृष्ण परमात्मा ने गीता में भी बताया—**‘यदा-यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत...’** तब मैं प्रगट होऊँगा।

स्वामिनारायण भगवान ने तो बता दिया कि मैं हमेशा और भारत में गुणातीत साधु के द्वारा प्रगट होऊँगा। उनके साथ जुड़ जाओ, तो ब्रह्मरूप हो जाओगे। आत्मा के साथ जो कारण देह जुड़ा हुआ है, वो ख़ाक़ हो जाएगा। जन्म-मरण के चक्कर में से निकल जाओगे।

यूँ जो देह धारण किया है, वो देह तो ब्रह्मरूप हो गया। अब ब्रह्मस्वरूप होने की साधना



चलेगी। तो ब्रह्मस्वरूप बनने के लिए-देहभाव से पर होने के लिए दो हाथ जोड़कर गुरुजी जैसे संत की आज्ञा में रहना। अक्षरशः आज्ञा का पालन करने में बुद्धि का उपयोग करना। **क्यों मुझे कहा? क्यों ऐसा बोले? ऐसा हो सकता है क्या? ऐसा नहीं हो सकेगा? बुद्धि को बोल देना—टें-टें ना कर।** पप्पाजी की भाषा में कहें—तो, बुद्धि को कहना ज्यादा टव-टव ना कर। पप्पाजी बहुत बुद्धिशाली थे, उन्हें दिखाई देता था कि कोई आदमी क्यों आया है? वो क्या बोलेगा? क्या मांगेगा? सब ख्याल पड़ता था। लेकिन आने वाले योगीजी महाराज के सेवक हैं, यूँ मान कर बुद्धि को कहा कि टव-टव ना कर, सबको निर्दोष मानना है। **ऐसे ही गुरुजी जो आज्ञा करें, वो स्ट्रीक्ली फॉलो करना और उनके संबंध वाले सबको निर्दोष मानना ही साधना है।**

अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना के मार्ग पर चलने वालों के लिए, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने आनंदपूर्वक प्रभु रूप होने का मार्ग खोल दिया और काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी द्वारा गुरुजी, प्रेमस्वामी, शांतिभाई, अश्विनभाई, दिनकरभाई, भरतभाई, बापुस्वामी जैसे संतों की हमें भेंट दी है। संत बहनों की भेंट दी है। इनके साथ लगाव और प्रेम से जुड़ जाओ। लेकिन दूसरों के प्रति पूज्यभाव, निर्दोषभाव रखना। **आज्ञा सिर्फ अपने गुरु की पालना।** ऐसा करेंगे तो गुणातीतानंदस्वामी ने जैसा कहा कि **साधु बनना और साधुता सीखनी है—वो हो जाएगा।**

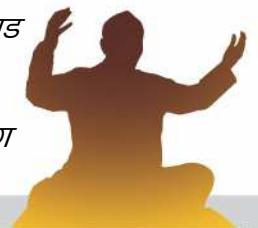
अब साधु बन गए, तो साधुता की ट्रेनिंग होगी। जब भीतर से सब एटैचमेंट छूट जाएंगे, तो एक प्रभु ही रहेंगे-गुरुजी रहेंगे। उसका आनंद एकदम अलग होगा। तब आपकी साधना सफल होगी, यह निश्चित है। प्रेमस्वामी, गुरुजी ये सब संतों, दिनकरभाई, अश्विनभाई, शांतिभाई, वशीभाई, भरतभाई सब व्रतधारी संतों ने क्या किया, बस बापा की आज्ञा में रहे। बापा ने कहा— दादुकाका की आज्ञा में रहो, दादुकाका ने कहा— पप्पाजी की आज्ञा में रहो। जिसे जो कहा, वे उसकी आज्ञा में रहे और सबके प्रति निर्दोषभाव रख कर सेवाभक्ति की, तो सब भीतर से पूरी तरह आनंद में रहने लग गये।

आप पूर्व जन्म से साधु होंगे। योगीजी महाराज कई लड़कों से कहते थे कि साधु बन जाओ। गुरुजी ने भी साधु होने के लिये मना करी थी, तो बापा ने उन्हें कहा कि आप पाँच जन्म से साधु बन रहे हो...

आप सब कितने भाव वाले हैं? **भक्तों की झंझट में नहीं पड़ना।**

गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि गन्ने के बीच वाला भाग मिला है। **सर्जन** का ब्लड ही साधु का है।

इसका नाम **आनंद!** कितना अच्छा नाम है? अखंड आनंद में रहने के लिए तो लोग



धक्के खाते हैं, पर तू तो आनंद ही है। तुम तीनों को खूब-खूब अभिनंदन और गुरुजी को ज़्यादा अभिनंदन। योगीजी महाराज बहुत खुश होंगे और हम सब संत लोग भी खुश हैं कि हमारी सेना में भर्ती हुए हो। हम सब संतों और संत बहनों का आशीर्वाद है कि आपकी साधुता खिल जाए और आनंदस्वरूप बनकर सबको आनंद बांटने का काम आपके द्वारा प्रभु करायें। ये गर्ग साहेब कितने नसीबदार-भाग्यशाली हैं? बहुत कृपापात्र-भाग्यशाली हैं कि गुरुजी को इनवाइट किया। ऐसे साधु की सेवा नहीं मिलती है। आपको सामने से सेवा दी है, तो करना। प्रेमस्वामी ने आज खूब-खूब आशीर्वाद दिया और आगे भी आशीर्वाद देते रहना। **हरिप्रसादस्वामीजी के वारिसदार हमारे लिए हरिप्रसादस्वामी का स्वरूप ही हैं।**

सभा के अंत में स्वरूपों के साथ के अपने स्वानुभव बताते हुए **प.पू. गुरुजी** ने शुभाशीष दी—
...साहेब और ख़ास करके प्रेमस्वामी ने आज खूब आशीर्वाद बरसाये, पर उस आशीर्वाद का भरोसा हमें रखना है। किस तरह मैं बताता हूँ—बहुत शुरुआत के दिनों में जब हम अक्षरभुवन में रहते थे, तो बापा को मैंने एक कागज़ लिख कर दिया। मेरे मन में जो बवंडर चल रहे थे, परेशानियाँ थीं, वो खूब भजन करने के बाद भी टल नहीं रही थीं। वो सब उसके अंदर लिखा हुआ था। बापा जब बाथरूम गये, तो मैं बाहर खड़ा रहा। जैसे ही स्टॉपर खुला, तो मैं बापा के नज़दीक गया। बापा समझ गए कि इसे कुछ बात करनी है। बापा ने गुजराती में पूछा— कांई कहेवुं छे? मतलब कुछ कहना है? तो मैंने कागज़ दिखाया। वे बोले—आओ, अंदर आओ। बापा आराम से बैठ पाएँ, तो वहाँ रखी बाल्टी को उल्टा करके उस पर मेरा गातरिया रख दिया और बापा से कहा— आप यहाँ बैठो। बापा उस पर बैठे तो सही, लेकिन कुंडों के कारण बाल्टी इधर-उधर डोलती रहती थी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद बाल्टी पकड़ कर बापा बोलते— ए पड़या-ए पड़या। मैं सोचूँ कि बापा पड़या-पड़या ही करते रहेंगे या मेरा कागज़ भी पढ़ेंगे या नहीं? फिर उन्होंने कहा— मुकुंदना अक्षर बहु सारा, बहु निर्दोष। यूँ कह कर वे खड़े हो गए। मैंने सोचा कि इन्होंने कागज़ तो पढ़ा नहीं और पड़या-पड़या करते रहे। ऊपर से मुझे खुश करने के लिए कह दिया— निर्दोष। दूसरे दिन काकाजी आए, तो मैंने कम्प्लेइन टोन में उनसे सारी बात करी कि ऐसा-ऐसा हुआ। काकाजी बोले— हमें बापा का भरोसा-विश्वास रखना पड़ेगा। काकाजी ने फिर इधर-उधर की थोड़ी बातें करी और चले गए। मेरे दो मार्गदर्शक थे— काकाजी और पप्पाजी। तो, मैंने सोचा कि पप्पाजी ठीक से जवाब देंगे। सो, पप्पाजी से बात करी तो उन्होंने एकदम कहा— देख, तुझे बापा का भरोसा हो या न हो, पर मुझे उनका पूरा भरोसा है। इसलिए मैं तो तुझे निर्दोष ही मानता हूँ कि मुकुंद निर्दोष है

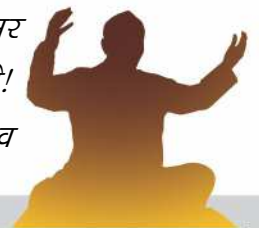


और आखिर तक पप्पाजी यह बात पकड़ कर रखी कि मुकुंद जो भी करे, पर वह निर्दोष है। ये बड़े पुरुष-सत्पुरुष, भगवान रखे हुए पुरुष हमें राह दिखाते हैं कि बापा के संबंध वाले, गुणातीतभाव को पाए हुए काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी के संबंध वाले हर एक को निर्दोष और दिव्य मानना है। इससे आगे **स्वामीजी** बात करते कि निर्दोष और दिव्य तो हम बोलते भी रहेंगे, भले मानेंगे भी कि भई, सामने वाला मुक्त जो करे वो दिव्य, हमें क्या लेना-देना? पर, वो जो करे वो सत्य है, यूँ मानें तब हमारी गांठें, कन्वीक्शन मान्यतायें पिघलती जाएंगी और फिर अक्षरधाम की मान्यता-दिव्यता धीरे-धीरे भीतर में फैलती जाएगी। जैसे एक सुराग हो, उससे अंदर लाइट जाये, तो धीरे-धीरे प्रकाश अंदर फैलता है। एकसरे का जिसे ख्याल होगा, उसे पता होगा कि सुराग में से एकसरे अंदर जाये, तो रेज़ सारा जलाती रहती है! **इसी तरह चेतना के अंदर जो धब्बे लगे हुए हों, जो गांठें पड़ी हुई हों, वो ऐसे प्रत्यक्ष संत की स्मृति के साथ और जीवंत स्वामिनारायण मंत्र रटने से पिघल जाती हैं।** स्वामिनारायण... स्वामिनारायण बोलने से संस्कार पड़ेंगे। लेकिन जिन्होंने भीतर में महाराज को अखंड प्रगटाया हो-गुणातीतभाव को पाये हुए—साहेब, प्रेमस्वामी, बापुस्वामी जैसे संतों की स्मृति के साथ भजन करेंगे, तो तुरंत ही वो मंत्र काम करने लगेगा। **कोई भी समस्या आये, तो इस बात का भरोसा करके अपनी सारी सोच छोड़ कर, स्मृति सहित सिर्फ धुन का सहारा हम लेने लग जायें।** ऐसे आज के दिन साहेब, प्रेमस्वामी सबको आशीर्वाद दें... हम सब इसी राह पर चलें।

शरदपूर्णिमा निमित्त दीक्षाविधि का उत्सव तो गुरुहरि काकाजी को खूब पसंद, दो दिन की सत्संग शिविर में परिवर्तित हो गया! 19 अक्तुबर की सायं 7:00 बजे कल्पवृक्ष में सभा के लिये बाहर से आये मुक्त एकत्रित हुए और इंटरनेट के माध्यम से स्थानिक मुक्त घर पर बैठ कर सत्संग का लाभ लेने तत्पर हुए।

जपयज्ञ धुन से सभा की शुरुआत होने के बाद दिल्ली मंदिर के खूब आत्मीय अक्षरनिवासी **प.भ. वी.के.अग्रवालजी** के सात वर्षीय पौत्र **उज्ज्वल** ने भगवान श्री स्वामिनारायण की नामावली पर आधारित कंठस्थ **‘घनश्यामाय नीलकंठाय’** स्तुति प्रस्तुत की। तत्पश्चात् दीक्षाविधि के उपलक्ष्य में हरिधाम से **प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी** द्वारा भेजे ऑडियो से निम्न आशीर्वाद प्राप्त किये—

...गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामी महाराज शरदपूर्णिमा के मंगल अवसर पर अकसर कहते थे—ब्रह्मभाव से परब्रह्म के साथ जुड़ने वाले हर साधक का आज जन्मदिन है! स्वामीजी महाराज, काकाजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रेरणा व



कृपा से, अक्षरयात्रा पर चल पड़े ऐसे हम सभी साधकों के जन्मदिन पर प.पू. साहेबदादा, प.पू. गुरुजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं सभी गुणातीत स्वरूपों की अनुवृत्ति के मुताबिक जीवन यापन कर, स्वयं गुणातीत दशा को प्राप्त किये सभी महामुक्तों के चरणों में वंदन सह बार-बार जय श्री स्वामिनारायण।

मन, कर्म, वचन से काकाजी महाराज का सेवन करके और उनकी अनुवृत्ति को ही अपना जीवन बनाकर काकाजी स्वरूप हुए **प.पू. गुरुजी की प्रेरणा से आज तीन युवक 'संत दीक्षा' प्राप्त करने जा रहे हैं**, इस बात से मन पुलकित हो रहा है। **प.पू. गुरुजी ने काकाजी, स्वामीजी और पप्पाजी की अपार प्रसन्नता प्राप्त करी है। उनके श्रीचरणों में समर्पित होने का मतलब है भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा प्रवाहित कल्याणधारा को जन-जन तक पहुंचाने के साथ-साथ अपनी यात्रा को प्रभु की ओर निरंतर आगे बढ़ाना।**

स्वयं गुरुजी की तरह काकाजी, स्वामीजी और पप्पाजी की प्रसन्नता के पात्र बनना। नवदीक्षित होने जा रहे इन तीनों की बात सुनकर, मुझे भी 48 साल पूर्व की स्मृति याद आ रही है। शायद वर्ष 1973 की बात होगी कि **वल्लभविद्यानगर** में मैं पढ़ाई कर रहा था। स्वामीजी महाराज और साहेब दादा द्वारा गुरुसभा में भाग लेने का सौभाग्य मिला था।

पौषी पूर्णिमा के उत्सव में प्रथम बार गुरुजी के दर्शन हुए थे। तब गुरुजी का निवास सांकरदा मंदिर में हुआ करता था। उत्सव की समाप्ति के पश्चात् गुरुजी को विद्यानगर से बस द्वारा सांकरदा जाना था। तो सेवक के रूप में उनके साथ जाने का सौभाग्य मिला। तब से गुरुजी के आशीर्वाद हमेशा मुझ पर बरस रहे हैं।

फिर तो जैसे-जैसे परिचय बढ़ता गया, तो **गुरुजी की सहजता, साधुता और प्रतिकूल परिस्थिति में भजन का बल लेने की श्रद्धा आदि अनेक गुण, जो उनके संपर्क में आने वाले हर किसी को सहजरूप से प्रभावित करते हैं, उनसे मैं भी प्रभावित होता रहा।**

तब बस में वे यात्रा करते थे और आज हवाई जहाज़ या अच्छी से अच्छी कार में यात्रा करते होंगे, पर गुरुजी की सहजता वैसी की वैसी ही है।

उन्होंने गुणातीत स्वरूपों की जो प्रसन्नता पाई व उनमें जो दासत्व है, उसका यह परिणाम है।

हरिप्रसादस्वामी महाराज ने दीक्षा देने के लिए जब मेरा चयन किया, तब कुछ समय मुझे दिल्ली प.पू. गुरुजी के पास रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहले से गुरुजी का फिज़िकल स्ट्रक्चर हर मौसम सहन न कर सके ऐसा है, ये बात हम सब अच्छी तरह



से जानते हैं। लेकिन उनकी दृष्टि में सिर्फ एक ही बात थी—काकाजी की आज्ञा और अनुवृत्ति! मैं जब गुरुजी की सेवा में दिल्ली आया, तब गुरुजी का निवास अशोकविहार में एक छोटी कोठी में हुआ करता था। वहाँ पर ऐसी कोई खास सुविधा नहीं थी। फिर भी काकाजी की प्रसन्नता के लिए गुरुजी भजन के सहारे हर सेवा-कार्य में तत्पर रहते थे।

स्वामीजी महाराज ने मुझे भेजा था, तो संबंध की दृष्टि से गुरुजी ने मुझे स्वीकार किया हो ऐसा सहज दर्शन हो रहा था। दालिया साहेब, नवीनभाई, बच्छराजजी, जानी साहेब इत्यादि को स्मरण होगा कि उस समय छोटी-मोटी हर सेवा करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। गुरुजी के मातृत्व युक्त हृदय का अनुभव तब बार-बार होता रहता था। छोटी-छोटी बातों में भी बहुत ख्याल रखते थे। सिर्फ भौतिक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जतन का भी उन्होंने हमेशा ख्याल रखा था।

हर रोज रात्रि को आराम में जाने से पहले वे मुझसे 'स्वामी की बातें' सुनते थे। कभी-कभी उन बातों का निरूपण करके मुझे समझाते भी थे। इस तरह गुरुजी ने 'चैतन्य माँ' की भूमिका भी अदा करी है।

गुरुजी ने हर प्रतिकूलता में सिर्फ और सिर्फ भजन को ही उपायभूत किया है। काकाजी ने भजन का महत्त्व जो समझाया था, उसे आत्मसात् करके गुरुजी घंटों तक भजन ही करते रहते थे। प्रतिकूलता को वे सहज रूप से सानुकूलता में रूपांतरित कर लेते थे।

गुरुजी की सेवा में था, उस समय काकाजी महाराज अकसर पधारते थे। उनकी सेवा-दर्शन का भी अद्भुत लाभ गुरुजी के माध्यम से मुझे मिलता रहा था। भजन को कैसे उपायभूत किया जा सकता है, यह ट्रेनिंग पाने के लिए ही मानो स्वामीजी महाराज ने मुझे दिल्ली भेजा था, ऐसा आज मुझे लगता है। **काकाजी की अद्भुत स्वरूपनिष्ठा और माहात्म्यभरी परावाणी का स्मरण हम सभी को रोमांचित करता रहता है।** उस परावाणी का प्रसाद रुबरु प्राप्त करने का बार-बार मुझे सौभाग्य मिला है।

गुरुजी ऐसी सहजता, सरलता, स्वरूपनिष्ठा और माहात्म्य के धनी हैं जिन्होंने काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी महाराज-अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबदादा आदि सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता प्राप्त करी है और उस प्रसन्नता का प्रसाद अपने संबंध में आए हुए हर किसी को उन्होंने वितरित किया है।

आज ये तीन युवा दीक्षित होकर अपनी आत्मा की यात्रा को गुरुजी की आज्ञा के अनुसार निरंतर प्रभु की ओर अग्रसर करने निकल पड़े हैं।



आज प.पू. प्रेमस्वामीजी भी उपस्थित हैं, उनके द्वारा गुरुहरि हरिप्रसादस्वामीजी के आशीर्वाद सभी साधकों पर बरस रहे हैं। आज स्वामीजी महाराज और प्रेमस्वामीजी दोनों का दीक्षा का दिन भी है। प्रेमस्वरूपस्वामीजी ऐसे मातृहृदय संत हैं, जिन्होंने स्वामीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी, साहेबजी आदि सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता प्राप्त करी है।

हर वर्ष 27 दिसंबर प्रेमस्वामीजी के प्रागट्य दिन पर स्वामीजी महाराज उनके गुणों का दर्शन कराते रहते थे। सन् 1986 में उनके प्रागट्य दिन पर स्वामीजी महाराज ने जो कहा था, वो मुझे याद आ रहा है कि —

प्रेमस्वरूपस्वामी यानि—एक निष्कामी पुरुष, एक पवित्र पुरुष! उनकी सेवा भगवान की सेवा है। ऐसे साधु का जन्म दिन है, जिनके दर्शन प्रभु के दर्शन तुल्य हैं। हम सभी भाग्यशाली हैं कि ऐसे चैतन्य जननी की गोद में रहने का अद्भुत अवसर स्वामीजी महाराज ने हम सभी को दिया है।

अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी के प्रागट्य दिन एवं स्वामीजी महाराज और प्रेमस्वामीजी के दीक्षा दिन पर यह दीक्षा उत्सव का आयोजन अपने आप में अनूठा है। यह मात्र नवदीक्षित संतों को ही नहीं, बल्कि हम सभी को स्वामीजी महाराज और काकाजी महाराज की अनुवृत्ति के अनुसार निर्विकल्प भजन करने की क्षमता अवश्य प्रदान करेगा।

ब्रह्मभाव से भजन करने की हम क्षमता प्राप्त करें,

सुहृदभाव, दासत्व और निर्दोषबुद्धि को आत्मसात् करके प्रभुमय जीवन की ओर हम निरंतर अग्रसर रहें। ऐसी स्वामीजी महाराज और काकाजी महाराज, साहेबदादा और सभी गुणातीत स्वरूपों की कृपा हम पर निरंतर बरसती रहे—यही हम सबकी ओर से सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना।

तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

...बड़ा मंगलकारी शुभ दिन। गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन! यह एक इतिहास है। स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्य सं. 1837 में हुआ। बहुत सारे परमहंसों ने पहले जन्म ले लिया था, लेकिन गुणातीतानंदस्वामी थोड़े रुक कर आये। दासत्वभाव से महाराज के प्रागट्य के 4 साल के बाद आए!

हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि यहाँ सुबह से हम भजन-आनंद कर रहे हैं। स्वरूपों के सान्निध्य में हम सब भावविभोर हो गये हैं...

सचमुच गुरुजी हँज क्रिएटेड हिस्ट्री—एट थी एइज ऑफ 85 सबको ऐसे बुलाना और



इकट्ठा करके उत्सव करना वो हिस्ट्री है। **उनका कितना प्यार होगा और जिसे भी बुलाया है, उसे उनके प्रति कितना लगाव होगा! निर्मलस्वामी** बॉम्बे थे और मुझे से कह रहे थे कि वशीभाई कहीं भी जाने का मन नहीं करता, अभी थक गए हैं। लेकिन **गुरुजी का वॉटसेप पर जो मैसेज आया, वो इतना टची था कि सब आने के लिये तैयार हो गये!** दिनकरभाई को जब मैसेज मिला तो, वहाँ रात थी। हमने उन्हें कहा भी कि आप अभी तो आकर गए हो और शिकागो से 16 घंटे की फ्लाईट में आना बड़ी मुश्किल बात है। उन्हें गुरुजी के प्रति कितना खिंचाव होगा कि वो भी खिंचे चले आए। नीलम बेन की एक आँख में मोतिया का ऑपरेशन हुआ है, दूसरी आँख का बाकी है; लेकिन वह बीच में छोड़ कर यहाँ आ गई। मेरा ऑपरेशन भी अभी हुआ है, तो मुझे ख्याल है कि तकलीफ तो होती है। लेकिन ज्योत की बहनों का गुरुजी के प्रति कैसा भाव होगा और दीदी की आज्ञा भी थी जो माया बहन और डॉ. नीलम बहन चले आये...

गुरुजी ने इस उत्सव में मानो सब ऑटो क्रूज पर रख दिया है! प्लेन जब उड़ता है, फिर सर्टन स्पीड में जाने के बाद उसे चलाना नहीं पड़ता। पायलॉट उसे ऑटो क्रूज पर छोड़ देते हैं। इतना बड़ा उत्सव हो रहा है; आप देखो कि सब सेवक दिखते भी हैं, फ्री भी हैं और काम भी करते हैं। गुरुजी के पास फाइनल बात आ जाती है कि ऐसा किया है। यह उन्होंने डेवलप किया है। आज सुबह निर्मलस्वामीजी ने बहुत अच्छी बात करी कि **हमारे पूरे गुणातीत समाज में अगर कार्य पद्धति और व्यावहारिकता में कोई एक्सपर्ट है, तो वो गुरुजी हैं** और फिर भी उनमें भाव है-भक्ति है।

डॅकोरेशन देखो; गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति रख देना कोई बड़ी बात नहीं है। पर, जिस प्रकार उसकी प्रेज़ेंटेशन की है, इट इज़ टचिंग। भक्ति, भाव-विभोरता, प्रोग्राम का सेटिंग—सब बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।

सबको कवर कर लेने की जो गुरुजी की भावना है, वो सेवकों में इनहेरेंट हो गई है। सबको इतना इन्वॉल्व कर लिया है कि किसी को ऐसा न लगे कि मुझे बुलाया नहीं, मुझे पूछा नहीं, मुझे कोई भाव ही नहीं दिया। हमारे **प्यारे प्रधानमंत्रीजी की भाषा** में ऐसा लगता है—**‘सबका साथ, सबका विकास।’**

जो उत्सव एरेन्ज करते हैं, उनसे पूछो। माया बहन को पूछो कि कितना डिफीकल्ट है टु टेक कैयर ऑफ़ इच एन्ड एवरी बडी।

इतने बीजी स्केड्यूल में भी जब स्वामीजी के अस्थि विसर्जन के लिये दिनकरभाई का जाना हुआ, तो गुरुजी ने फोन पर वेधर देखा कि कल वहाँ बारिश होगी और



वहाँ सिर्फ छतरी से नहीं चलेगा। सो जाने वालों को रेन कोट दिया कि आप वहाँ गंगाजी में नीचे उतरो, तो भीगो नहीं। **कितना टेंडर कैंयर।**

हरिद्वार में पैर फिसलने से दासस्वामीजी को चोट लगी। तब ऐसा हो जाये कि अब हरिद्वार में कैसे सब करें? लेकिन, **गुरुजी ने डॉ. दिव्यांग वगैरह को इतना सेट करके रखा है कि दिल्ली में दासस्वामी के ऑपरेशन के लिये एडमिशन हुआ, ऑपरेशन हो गया और अच्छा हो गया!**

वो सब ऑटो क्रूस! ये ऑटो क्रूस के लिए जो सिस्टम डेवलप करना पड़ता है, उसके पीछे जो मेहनत करनी पड़ती है, वो बहुत होती है। गुरुजी की 25-30 साल की ये साधना है-तप है। हरेक इंडीवीड्युअल के साथ, हरेक भक्त के साथ। यू केन सी धॅट।

उज्ज्वल एण्ड लीला! उज्ज्वल कितना छोटा है, लेकिन इतना अच्छा गाना कहाँ से आया? लगता है कि बहुत भक्तों को दिल्ली में अवतार लेने का मन होता है।

औरंगाबाद में दिनकरभाई की दृष्टि में हैरत नाम का लड़का आया। आजकल ऑनलाइन सभा होती है। सुबह वह तैयार होकर, पूजा करके टीका लगा कर बैठ जाता है। सुबह में 7 बजे आरती होती है; लेकिन 6.45 पर कम्प्यूटर चला कर वो सबको ऑनलाइन जोड़ता है। फिर दिनकरभाई जब लाभ देते हैं तो किसके ऊपर कैमरा म्यूट करना और किसके ऊपर अनम्यूट करना, वो सारा देखता है। इट्स ए टीडीयस जॉब। पर वो लड़का बहुत अच्छी तरह करता है। हम हमारी दृष्टि बदलेंगे, तो पता चलेगा कि डीवीनीटी इज़ एराउन्ड अस ऑल धी टाइम।

गुरुजी ने इतने भाव से सबको बुलाया कि एक इन्वीटेशन से **साहेब दादा** भी इतना भीड़ा लेकर आये। **हेमंतभाई मर्वट** ने एक भजन में गुरुजी के लिये लिखा है कि –

चाहो तुम और हो सके न ऐसी क्या कोई बात है... यह इनके हर उत्सव में दिखाई देता है।

दूसरी बात— आज सुबह दीक्षा विधि हुई, वो भी ऐतिहासिक है। एक महीना पहले हम आये थे, तब एक सेवक को ड्रेस की दीक्षा दी थी। तब साधु की दीक्षा की कोई बात ही नहीं थी। एक महीने में सब तैयारी हो गई।

आनंद बहुत छोटा था, तब से मैं उसे जानता हूँ। वो तो तैयार हो जाए, लेकिन उसके पापा भी को अभी साधु बनाओ, तो वो भी तैयार हो जाए ऐसा उसका भाव है। **योगी और सर्जन** भगत—वो भी एक इतिहास है। **‘इन्हें मुंड दो साधु बढ़ जायेंगे’**— ऐसा नहीं है। काकाजी ने गुणातीत समाज के लिए जो योजना बनाई है, उस योजना के अंतर्गत ये दीक्षा हुई है।

भरतभाई ने काकाजी की शताब्दी पर एक बुक निकाली थी – **‘अस्खलित मंगल**



कृपाधारा'। उसमें स्वामिनारायण प्रकाश में काकाजी के लिखे बहुत अच्छे-अच्छे लेख हैं। उसमें काकाजी ने दीक्षा के बारे में लिखा है कि हम यह कैसी दीक्षा लेते हैं। सुबह संकल्प किया—**‘धाम, धामी और मुक्तों के सनातन संबंध की अलौकिक स्थिति प्राप्त करनी है।’** जीतेजी अक्षरधाम का सुख लेकर, सबकी सेवा तो करनी ही है, लेकिन भगवान का सुख लेने के लिए ये करनी है। सो, गुरुजी की सेना में जुड़ कर आपको सेवा करनी है और भगवान का सुख लेना है। अन्यो के यहाँ दी गई दीक्षा में और हमारे यहाँ दी गई दीक्षा में यह फ़र्क है कि अलौकिक स्थिति प्राप्त कर लेनी है, जीतेजी भगवान का सुख लेकर अन्यो को भी देना है। इस तरह **स्वधर्म युक्त रहकर गुणातीत ज्ञान फैलाना है।**

आज गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन है। गुरुजी ने ये भी एक इतिहास रचा कि गुणातीत ज्ञान का फैलावा न केवल दिल्ली में-इंडिया में, बल्कि विश्व में सब जगह गुणातीत ज्ञान का फैलावा हो, ऐसे दिन पर आपको दीक्षा दी है। सो यु आर **‘धी मोस्ट, मोस्ट, मोस्ट लक्कीएस्ट साधु इन धी वर्ल्ड।’** सुबह साहेब ने आशीर्वाद दिया, उसके बाद गुरुजी ने समझाया।

तो, प्रार्थना करने के लिए एक बात दोहराता हूँ।

गुरुजी को योगीबापा ने कहा था कि हम ऐसा नहीं कर सकते, शास्त्रीजी महाराज ऐसा कर सकते हैं। वो बहुत पावरफुल हैं। यूँ **योगीबापा अपना नाम नहीं देते थे। शास्त्रीजी महाराज का नाम लेते थे। काकाजी अपना नाम नहीं लेते थे, योगीजी महाराज का नाम लेते थे। ऐसे गुरुजी इतने बड़े और इतने समर्थ हैं; साहेबदादा, प्रेमस्वामी, निर्मळस्वामी इतने समर्थ हैं कि आपकी साधुता तो ऐसे ही सिद्ध हो जाएगी।** आपको तो ये मार्ग ऐसे ही सिद्ध हो जाएगा। एकांतिक धर्म प्राप्त करके आप गुणातीतज्ञान की सेवा में लग जाओगे। हम सब भी भाग्यशाली हैं। आप तीनों ने ही दीक्षा नहीं ली, बल्कि हम सबने दीक्षा ली है। हम सबने अपनी दीक्षा रीनोवेट करी है। तो आज प्रार्थना है कि

हे गुणातीतानंदस्वामी! आज आपका प्रागट्य दिन है,

हे हरिप्रसादस्वामीजी! आज आपका दीक्षा दिन है,

हे प्रेमस्वामीजी! आज आपका दीक्षा दिन है,

स्वामीजी यहाँ प्रगट हैं-हैं-हैं ही हैं। हमारी बात और हमारी प्रार्थना सुन रहे हैं।

साहेबदादा, गुरुजी, निर्मळस्वामी हैं, तो यही प्रार्थना है कि

ये गुणातीत स्थिति प्राप्त करके हमें जो जीना है, वो हमारे लिए एकदम सरल बनाना।



उसके लिए आपको थैंक्स और हम इसमें जीते ही रहें, जीते ही रहें और प्राप्ति का सुख लेते ही रहें, लेते ही रहें और सबको देते रहें यही प्रार्थना।

स्वरूपों एवं मुक्तों के साथ की पुरानी स्मृतियाँ करते सांकरदा के **प.पू. बापुस्वामीजी** ने शुभकामनायें देते हुए कहा—

...योगीजी महाराज, पप्पाजी, काकाजी के प्रवचन में स्वामी की बातें, वचनामृत-अक्षरधाम की बातें होती हैं... मैंने अपने जीवन में ऐसा महसूस किया है कि हमारा मार्ग केवल कृपासाध्य मार्ग है। गुरुजी के संकल्प से साहेबजी, प्रेमस्वामीजी, निर्मळस्वामीजी और विद्यमान सभी स्वरूपों के सान्निध्य में हम अक्षरधाम का सुख ले रहे हैं।

गुणातीतानंदस्वामी ने बताया है कि भगवान और साधु की महिमा की बात निरंतर करना और सुनना...

1966 से लेकर 1985 तक — जब काकाजी थे, तब तक हमने संप-सुहृदभाव-एकता के साथ छोटे-बड़े उत्सव किए। उस समय अपने किसी भी केन्द्र में कोई गाड़ी नहीं थी। हमारा कोई मंदिर नहीं था; हरिधाम-सांकरदा कुछ नहीं था। हरिभक्तों ने हमें एक-एक बर्तन भेंट में दिये और सांकरदा के हरिभक्तों ने चातुर्मास दौरान सबकी बारी बांधी थी। सुबह दस बजे भोजन सामग्री जब आती, तो कोठारीस्वामी चूल्हे पर खाना पका कर सबको खिलाते थे।

बरसों पहले शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज सांकरदा में खूब रहे हैं। सांकरदा मंदिर की शुरुआत में दासस्वामी, प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी आते-जाते रहते थे... काकाजी, पप्पाजी और बा ने सबका माहात्म्य हममें भरा है। हमारे जीवन में साहेबजी, सोनाबा ने भी काम किया है। हम जब युवक थे, तब मुकुंदजीवनस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी ने हमारा विशिष्ट ध्यान रखा...

आज साहेब ने बताया कि बोचासण में हम 15 संतों को जब दीक्षा लेने की बात हुई थी, तब काकाजी, हरिभाई साहेब, जशभाई साहेब मौजूद थे। उस समय के प्रसंग का वर्णन करते हुए साहेब ने अच्छी तरह से बताया और योगीजी महाराज ने कहा था— सामी छातीए बधां तैयार थईने आव्या छे। ये केवल काकाजी और प्रगट स्वरूपों की कृपा से अक्षरविहारीस्वामीजी ने सारे गुणातीत समाज की माहात्म्य युक्त सेवा करी... हमारे लिए यही अक्षरधाम का सुख है।

अक्षरविहारीस्वामीजी ने गुरुजी के अमृतमहोत्सव से कुछ समय पहले सांकरदा के स्टाफ को बात करी थी कि हम पहले गुणातीत समाज के हैं, बाद में सांकरदा के हैं। गुणातीत समाज की माहात्म्ययुक्त सेवा करना उन्होंने हमें सिखाया है।



इसके सिवा हमको ज्यादा समझ आता नहीं...

अक्षरविहारीस्वामीजी के अक्षरधामगमन के बाद तो हम सब दासत्वभक्ति में ही लीन रहते हैं। निष्कामस्वामी के अक्षरधामगमन के बाद साहेब, मुकुंदजीवनस्वामी, प्रेमस्वामी, त्यागवल्लभस्वामी, दासस्वामी का हमें खूब प्यार मिला है। हम सब उनके ऋणी हैं और एक जिम्मेदारी से मिल-जुलकर कार्य करते हैं। कोई बड़ा डिजीन लेना होता है, तो साथ में बैठकर करते हैं। हमें ऐसा महसूस होता है कि अक्षरविहारीस्वामीजी व निष्कामस्वामीजी और सभी प्रत्यक्ष स्वरूप हमारे साथ में ही हैं। योगीजी महाराज ने काकाजी-पप्पाजी की भेंट हमें दी और विद्यमान स्वरूपों की भेंट काकाजी, पप्पाजी और बा ने दी है।

आज दीक्षा महोत्सव का हम जो दर्शन करते हैं, वो मानो योगीजी महाराज ने जो दीक्षा दी थी, उसका दर्शन करते हैं।

ये नवदीक्षित संत 10-15 साल से सेवा में हैं ही। इन्हें तो कुछ करना ही नहीं है। मुझे आज बहुत आनंद हो गया, जैसे मंत्रीगण शपथ लेते हैं, वैसे आज इन तीन पार्षदों की जिम्मेदारी लेते हुए गुरुजी ने शपथ ली।

योगीजी महाराज ने ऐसा कहा था कि मेरे संकल्प में जुड़ जाओ। पात्र भी मैं बनाऊंगा और ब्रह्मरस भी मैं ही भरूंगा। दीक्षा लेने के बाद हम योगीजी महाराज के पास तो डेढ़ साल ही रहे। तो ये कार्य बाद में काका, पप्पा और बा ने किया। अक्षरविहारीस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, साहेब, मुकुंदजीवनस्वामी के साथ तो कभी हमारी मित्रता थी, तो कभी गुरुभाव भी... हरिभाई साहेब, देवशीबापा, कोठारीस्वामीजी को भी नहीं भूलना चाहिए। इन सभी स्वरूपों ने हमारे जीवन में काम किया है।

1966 से 1985 तक हमने जो आनंद किया, आज वो ही महसूस हुआ है।

दासस्वामी होते तो खूब आनंदित हो जाते। दासस्वामी को ये सब बहुत पसंद आता है। गुणातीत समाज के सभी मिल-जुलकर अगर सूखी रोटी और कढ़ी खाते हैं, तो उसमें भी आनंद होता है। **मिल-जुलकर जो महिमा और गुणगान होता है, उसकी बात ही अलग होती है।** हम यही करते हैं। हमें सेवा का मौका मिलता रहे, यही आज साहेब, गुरुजी, प्रेमस्वामी, निर्मलस्वामी और सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

तत्पश्चात् पू. डॉ. दिव्यांग ने 'लागे वैकुण्ठथी रुड़ू वड़ताल...'

भजन प्रस्तुत करते हुए पूरा वातावरण इतना इलेक्ट्रीफाई कर दिया कि अंत में 80



वर्षीय प.पू. निर्मलस्वामीजी और मुंबई के पू. अनिलभाई माणेक खड़े होकर गरबा करने लगे। आज की सभा के आरंभ में पू. उज्ज्वल ने जब भगवान स्वामिनारायण की वंदना गाई थी, तब संतभगवंत साहेबजी, प.पू. प्रेमस्वामीजी और प.पू. शांतिभाई साहेब नहीं थे। सो, इन सबसे आशीष लेने के लिये पू. उज्ज्वल ने पुनः वह गाई। इसे सुन कर संतभगवंत साहेबजी इतने राजी हो गये कि जब पू. उज्ज्वल उनसे आशीर्वाद लेने गया, तो अपनी माला उसके गले में डाल दी और डॉ. पू. मनोजभाई सोनी ने तो उसके पैर छू कर उसे अपनी गोद में उठा लिया और गले लगाया। यूँ पू. उज्ज्वल ने सभी से आशीर्वाद प्राप्त कर लिये। तदोपरान्त प.पू. शांतिभाई साहेब ने निम्न आशीर्वाद दिया —

...श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के दिव्य स्वरूप आज भी प्रगट हैं। गुणातीतानंदस्वामी से प्रगट हुए आज तक के सर्व स्वरूपों को वंदन करते हैं। एक साधक ने प्रश्न पूछा कि सत्संग की क्या आवश्यकता है? एक ही वाक्य में अश्विनभाई ने जवाब दिया कि हमारे भीतर आत्मा में जो भगवान बैठे हैं, उन्हें हमारे रोम-रोम में प्रगट करना है। हमारे शरीर में दोष का जो साम्राज्य फैला हुआ है, उसे निकाल कर वहाँ भगवान को बिठाना है। जिसे प्रगट स्वरूप मिलते हैं, वे ही ये प्राप्ति कर सकते हैं।

हम सब ऐसी पुण्यशाली आत्माएँ हैं, जिन्हें प्रभु प्रगट मिले हैं। उसकी प्रतीति हम सबको है। योगीजी महाराज ने एक बार बताया था—

नौ चीजों का त्याग करना। फिर वे नौ चीजें गिनवाई— काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, ईर्ष्या और अहंकार। एक साधक ने पूछा— बापा! इन चीजों का हम अपने आप त्याग कर सकते हैं क्या? तो स्वामीश्री ने कहा— नहीं हो सकता। अगर अपने आप संभव हो, तो यहाँ क्यों आये? दवाखाने में क्यों जाना पड़ता है? यह दवाखाना है। महाराज ने कहा है कि बड़े पुरुष रास्ता बताते हैं जिससे क्रोध व लोभ जीता जा सकता है। यूँ जब वे रास्ता बतायें, तो जीत सकें।

हम सब ऐसे भाग्यशाली हैं। क्योंकि ऐसे प्रगट संत हमेशा रहेंगे ही, भगवान स्वामिनारायण का ऐसा आशीर्वाद हम सबको मिला है।

ये पू. उज्ज्वल गा रहा था, तो प्रतीत होता है कि वो इस जन्म में नहीं सीखा है। इस उम्र में वो ये

सब कहाँ से सीखेगा? **भगवान स्वामिनारायण का संबंध शाश्वत है और इस संबंध वाली आत्मा ऐसा ज्ञान लेकर आती है।** आज सुबह गर्ग साहेब आये थे। गुरुजी को मिले, प्रणाम किया, दर्शन हुए तो सत्संग में आ गए।



पहले ही दर्शन में जिन्हें संत में 'भगवान' दिखाई देते हैं, वे आत्मा सामान्य नहीं होती है।

ऐसे दिव्य पुरुष जब मिलते हैं तो मान, स्वाद, लोभ, काम सब चला जाता है। यहाँ दिल्ली में सब सत्संगियों, संतों का दर्शन करते हैं; हमारे सब केन्द्रों में, संतों-भक्तों का दर्शन करते हैं, तो प्रतीत होता है कि सब आत्माएं पूर्व की संबंध वाली हैं। इसीलिए योगीबापा ने बताया कि संबंध वाले सबको माथे का मुकुट मानो। 'सबको पूर्व का संबंध है'—यह समझ कर जब हम इनके चरणों में नमन करते हैं, तो भगवान, योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, गुरुजी, साहेबजी, प्रेमस्वामी को वंदन होता है।

दो दिन से हम देखते हैं कि यहाँ प्रेम है; वैसे तो प्रेमस्वरूप यहाँ हैं, तो प्रेम होना ही चाहिए। **मनोजभाई ने बताया कि यहाँ मैनेजमेंट बहुत उत्तम है।** एक साधक ने प्रश्न पूछा कि मैनेजमेंट तो बहुत जगह पर होता है। तो यहाँ जो है इसमें क्या है? मनोजभाई ने बताया कि यहाँ मैनेजमेंट अलग है। यहाँ मैनेजमेंट महिमा से होता है। वो भक्ति करते हैं। यहाँ जो दास बनकर सेवा करते हैं, उस सेवा से सब स्वभाव चले जाते हैं। अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी का वो ही **तत्त्व आज गुरुजी में है—यह हम जितना-जितना मानेंगे, हमारा दोष चला जाएगा। दोष टालने का कोई और तरीका है ही नहीं। एक ही तरीका है—हमें जो स्वरूप मिला है, उनके साथ पक्का संबंध और उन्हें निर्दोष मानना।** अगर उन्हें निर्दोष मानते हैं, तो उनके संबंध वाले भी निर्दोष कहे जायें। एक बार योगीबापा को पहनाये हार में एक चींटी घूम रही थी। एक साधक ने उसे पकड़ कर फेंक दिया और फिर बापा से पूछा— इसका क्या होगा? बापा ने कहा— इंद्राणी बन चुकी! एक छोटी चींटी जो बापा के हार में थी, उसको इतनी ऊंची पदवी मिली! हम तो गुरुजी, साहेबजी, प्रेमस्वामीजी, निर्मलस्वामीजी, दिनकरभाई की गोद में बैठे हुए हैं! हमारा काम तो हो ही गया है। कल्याण तो हुआ है ही; अब तो हम हमारी आत्मा को शुद्ध करके, दोष टाल कर केवल इनकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए साधना, सेवा-भक्ति कर रहे हैं। हम में जो देहभाव है, वो टल जाए और आत्मभाव में हम सब जीएं, ऐसी कृपा ये शरदपूर्णिमा के अवसर पर, ये दीक्षा विधि के अवसर पर और हरिप्रसादस्वामीजी व प्रेमस्वामीजी की दीक्षा जयंती के अवसर पर सबको प्राप्त हो जाए, ऐसी कृपा सब पर हो जाए ऐसी प्रार्थना।

सभा का समापन **प.पू. निर्मलस्वामीजी** के आशीर्वचन से हुआ—

...आज भगवान स्वामिनारायण की दिव्य चेतना सभा में अखंड प्रवाहित हो रही है। मेरे पास भाषा नहीं है, लेकिन भाव तो है। आज तीन लड़कों ने दीक्षा ली। मुझे मालूम



हैं कि साधु बनने का बहुत-बहुत आनंद होता है। साधु बनना तो गौरव की बात है। भगवा कपड़े में मुझे 70 साल हो गए...

जब योगीजी महाराज ने हरिप्रसादस्वामीजी को दीक्षा दी, तो योगीजी महाराज ज़ाहिर में बोले थे कि—आज से हमारा कार्य हरिप्रसाद करेंगे, स्वामिनारायण भगवान का ऐश्वर्य हरिप्रसादस्वामी में खिलेगा। हरिप्रसादस्वामी ने अनलिमिटेड काम किया...

गुणातीतानंदस्वामी की प्रकरण 16 की बात करते हुए पप्पाजी ने मुझसे एक बार कहा था कि 16 प्रकरण में 11 बात तो मेरी है। 11 बातें तो मैंने सिद्ध की हैं, पर मुझे 11 बातों के अनुसार जीता समाज तैयार करना है।

पप्पाजी ने गोंडल में कैसी सेवा करी, उसका एक प्रसंग कहता हूँ। गोंडल में शंभु भगत था। उन्हें पेट पर बड़ी गांठ थी। इसलिये उनके कपड़े और बिस्तर गंदे हो जाते। तो, पप्पाजी और सोनाबा मिल कर रोज़ सफ़ाई करते। पप्पाजी ने सोनाबा से कहा कि गंदी धोती फेंक देते हैं और नये कपड़े ले लेंगे। सोनाबा बोलीं— मैं गोंडली नदी में जाकर सारा साफ़ करके लाती हूँ। मैंने शंभु भगत को देखा, कपड़े को नहीं। यूँ पप्पाजी और सोनाबा ने जो सेवा करी है, वो मैंने खुद देखी है।

काकाजी को जब बापा ने समाधि कराई, तब मैं साथ में ही था। वो लाभ मुझे मिला है। काकाजी समाधि अवस्था में घनश्याम महाराज की मूर्ति के पास सोये हुए थे। कुछ लोग कहते थे कि ये समाधि नहीं है, ये झूठ है। तो, मोटी सूई लेकर काकाजी की देह में चुभाते थे, तब भी वे हिलते नहीं थे। लाल मिर्च का धुँआ काकाजी की नाक के पास लाते, तब भी उन्हें कुछ नहीं होता था। ये समाधि सच्ची थी; पर कुछ लोग बोलते थे कि ये ढोंग है। पर मैं साथ में था और इसका साक्षी हूँ। काकाजी ने जो कार्य किया है, वो मैंने अपनी आंखों से देखा है। **योगीजी महाराज ने जो-जो आज्ञा करी, उसके अनुसार काकाजी ने अपना सारा जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया।**

साहेबजी को मैंने कॉलेज के समय से देखा है। साहेब उस समय बहुत खूबसूरत लगते थे— **‘दीसे मूर्ति अलौकिक-मनोहर सारी...’** ये मूर्ति जो मैंने देखी थी, आप लोगों में से किसी ने नहीं देखी होगी। पप्पाजी के पास सब बोलते कि साहेब तो राजकुमार लगते हैं।

अक्षरपुरुषोत्तम उपासना पद्धति को मैंने बहुत अच्छी तरह निहारा है। मैं सब कुछ जानता-समझता हूँ... मैंने तो बहुत अनुभव किया है। मैं अनपढ़ ज़रूर हूँ, प्राइमरी स्कूल मुझे मालूम नहीं है, वर्णमाला भी पढ़ा नहीं हूँ। आशीर्वाद से साधु बना हूँ।



विद्यानगर-ब्रह्मज्योति में किसी अनुयायी ने ऐसा नहीं कहा कि छपैया वाले धर्म-भक्ति के पुत्र ये साहेब हैं। साहेब की उपासना पद्धति समझने जैसी है। ये बात बोलना बहुत आसान है, पर स्वामिनारायण संप्रदाय में शिक्षापत्री, वचनामृत के अनुसार अपनी उपासना पद्धति वर्तन में होनी चाहिये...

इतने बड़े गुणातीत समाज में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब, प्रेमस्वामी, गुरुजी का हमें सेवन करना है। **पूजन सबका करना, पर सेवन एक का करो...**

...योगीजी महाराज के समय में ट्रस्टी और बड़े-बड़े हरिभक्त कहते कि योगीजी महाराज को कुछ मालूम नहीं है। हम संतों को बापा इनके कपड़े धोने कहते, खाना खिलाने और स्नान कराने की आज्ञा करते। हम हरिभक्तों के कपड़े धोते, पैर दबा देते, खाना खिला देते, गर्म पानी से स्नान कराते। फिर भी वे हमारे लिये कहते—मुफ्त का खाने वाले हैं, खाने के लिए साधु बने हैं। ऐसा रोज़ बोलते, तो हमने बापा से बात करी कि इन हरिभक्तों की हम सेवा-चाकरी करते हैं, फिर भी ये बोलते हैं कि खाने के लिए साधु बने हैं। तो हमें इनकी सेवा करनी है या नहीं करनी। बापा ने इतना अच्छा जवाब दिया कि घर पर इनकी कोई सुनता नहीं है, तो ये तुम्हें सुनाते हैं!

गोंडली में एकदम कम पानी होता था और वह गंदा पानी दुर्गंध वाला होता था। योगीजी महाराज ने मुझे आज्ञा करी थी की तुम्हें गोंडली नदी में रोज़ स्नान करने जाना है। मेरे सारे कपड़े बिगड़ जाते थे। मैंने योगीजी महाराज से कहा कि पानी बहुत गंदा होता है। फिर भी योगीजी महाराज ऐसा कहते कि अंदर जाकर स्नान करना। मैंने हरिप्रसादस्वामीजी (प्रभुदासभाई) से यह बात करी तो उन्होंने ने कहा कि बापा की आज्ञा है तो गोंडली नदी में स्नान करने तो जाना है, पर फिर यहाँ आकर नल पर स्नान कर लेना।

मेरा अनुभव है कि योगीजी महाराज ने जो सुख और समाधान दिया है, वो सुख काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब हमें देते हैं... कवि काग ने बोला कि योगीजी महाराज के पास जाते हैं, तो चरित्रवान साधु की सुगंध आती है। पप्पाजी ने 3-4 बार मुझे बोला था— तूने योगीजी महाराज की चुनरी ओढ़ी है! ऐसे ही आज पार्षदों ने गुरुजी की चुनरी ओढ़ी है। **इस चुनरी का रंग सामान्य नहीं है। विश्व में ये चुनरी काम करेगी। आज जो दीक्षा दी है, उसके लिये उनके मां-बाप को कोटि-कोटि धन्यवाद।**

...योगीजी महाराज के साथ गांव के 90-95 साल के बूढ़े हरिभक्त फिरते थे। एक बार दीवाली-अन्नकूट आया। अन्नकूट में इतनी सारी मिठाई थी, तो एक दादा को



बड़े थाल में खाना दिया। पर दादा खा ही नहीं रहे थे। तो संतों ने प्रार्थना करी कि दादा खाओ। दण्डवत् किया, तो भी नहीं खा रहे थे। फिर योगीजी महाराज आए और पूछा कि क्यों नहीं खा रहे हो दादा? दादा की आंखों से चने जितने मोटे-मोटे आंसू टप-टप निकल पड़े और रोने लगे। बहुत बार पूछा तो दादा कहने लगे कि मैं यहाँ इतनी अच्छी-अच्छी मिठाई और खाना खा रहा हूँ, पर घर पर 'धमला की माँ' क्या खाती होगी? देखो, 85 साल की उम्र में धमला की माँ-अपनी पत्नी की याद आई!

सच, साधु होना कोई सामान्य बात नहीं है। गुणातीत ज्योत में बहनों की जब शुरुआत करी, तब योगीजी महाराज ने अच्छा संदेश दिया था और रसोईघर छोटा था, तो वह बड़ा करने की आज्ञा दी। योगीजी महाराज ने बहनों के लिये कई बातें करी हैं। ये कोई सामान्य कपड़े वाली बहनें नहीं। सच, **सोनाबा ने जो भी कार्य किया है और अभी जो बहनें कार्य कर रही हैं, वह केवल और केवल योगीजी महाराज के कारण है।**

मुझे ख्याल है कि बहनों का मुंडन इत्यादि कराने की बात हुई थी, तो **योगीजी महाराज मेरे सामने बोले थे कि इन्हें तो पुरुषोत्तम नारायण का संबंध है। ये तो धणी वाली हैं, बिना धणी की नहीं हैं।** इनके धणी स्वामिनारायण भगवान हैं; इसलिये बाल रखें, चूड़ी पहनें और कंकु लगा कर कंठी पहनें। **यह योगीजी महाराज का संकल्प है, अपने आप नहीं किया।**

तीनों पार्षदों को भागवती दीक्षा देने हेतु **20 अक्टुबर** की सुबह 9:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में **पू. मैत्रीस्वामी** ने महापूजा का मंगल प्रारंभ किया। संतों को भागवती दीक्षा मिलनी थी, साथ में दिल्ली मंदिर से खूब आत्मीयता से जुड़े **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** 'सेवक संत' की दीक्षा लेने वाले थे। अतः महापूजा में यजमान के रूप में बैठ कर वे महापूजा से लाभान्वित हो रहे थे। करीब एक घंटे के बाद स्वरूपों ने हॉल में प्रवेश किया। तीनों पार्षद भगवी धोती पहन कर दीक्षा विधि के लिये आये। तब दीक्षार्थियों की भावना प्रकट करता नया भजन **'मरजी में तेरी मिट जायें...'** ध्वनिमुद्रण द्वारा प्रस्तुत हुआ।

तत्पश्चात् **हरिधाम के उत्तराधिकारी** के रूप में सम्मानित करते हुए संत भगवंत साहेबजी और प.पू. गुरुजी ने सभी की ओर से **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** को शाल ओढ़ाई। साथ ही **प.पू. निर्मलस्वामीजी**

का भी शाल ओढ़ा कर अभिवादन किया। तत्पश्चात् संतभगवंत साहेबजी की प्रेरणा से **पू. डॉ. मनोजभाई सोनी** ने प.पू. प्रेमस्वामीजी की स्तुति वंदना का निम्न गुजराती श्लोक का गान किया और इसका हिन्दी अनुवाद होने की भी भावना प्रकट की।



योगीशु महाराजना स्वप्नमां पाभी श्रीशु-स्वामीने।
सेव्या दादुकाका ने अहो परम गुरुहरिस्वामीने॥
सुहृद दासत्वसुमन अहो सरण आत्मीयता शोभती।
स्वामी प्रेमस्वप्नदास वंदन प्रेमलहृदय लावणी॥

पू. डॉ. मनोजभाई सोनी की भावना सुन कर, सभा दौरान ही प.पू. गुरुजी ने स्वयं श्लोक का हिन्दी अनुवाद किया, जिसमें पू. डॉ. मनोजभाई एवं पू. राकेशभाई ने थोड़ा बदलाव किया।
पू. डॉ. मनोजभाई सोनी ने उसे भी निम्न रूप से गाकर प्रस्तुत किया —

योगीजी महाराज के स्वरूप में निरखे श्रीजी-स्वामी को।
सेये दादुकाकाजी व परम गुरुहरि स्वामी को॥
सुहृद दासत्वसुमन महकते आत्मीय सब के सरल।
स्वामी प्रेमस्वरूपदास वंदन भक्तिहृदय है सजल॥

स्तुति वंदना के बाद प.पू. वशीभाई ने दीक्षार्थियों को 'भागवती दीक्षा' का संकल्प कराया और तीनों दीक्षार्थियों ने स्वरूपों एवं वडील संतों के वरद हस्तों से जनेऊ, कंठी, कलावा, गातरिया-गुरुमंत्र, पाघ एवं पूजा प्राप्त की।

तीनों दीक्षार्थियों को नये नाम का उद्घोष करने हेतु, गुरु परंपरा का स्मरण करते हुए

प.पू. शांतिभाई साहेब ने

पू. योगी भगत को **साधु योगीस्वरूपदास,**

पू. आनंद भगत को **साधु आनंदस्वरूपदास**

और

पू. सर्जन भगत को **साधु सरयूविहारीदास** नामाभिधान किया।

पू. डॉ. मनोजभाई सोनी ने तीनों संतों को शाल ओढ़ा कर अभिवादन किया।

संतों और हरिभक्तों के माथे पर शोभायमान तिलक-चांदला भगवान स्वामिनारायण के आश्रित होने का प्रतीक है। सो, **प.पू. निर्मलस्वामीजी** ने तीनों संतों को चंदन का तिलक किया और **पू. सुहृदस्वामीजी** ने कंकु का चांदला करके तीनों को माला पहनाई।

प.पू. हंसा दीदी को दिल्ली मंदिर एवं प.पू. गुरुजी से विशिष्ट लगाव है, सो 'दीदीबा' ने नये संतों के लिये गुरुहरि पप्पाजी के स्वहस्त लिखित आशिष की प्रतियाँ और आशीर्वाद पत्र भेजा, **पू. इलेशभाई** ने वह पढ़ कर सुनाया, जो हिन्दी में निम्न प्रस्तुत है—



20 अक्टुबर 2021 सुबह



हरिप्रसादस्वामीजी के वारिसदार हमारे लिये उनका स्वरूप ही हैं...

- संतभगवंत साहेबजी



यु आर धी मोस्ट, मोस्ट लक्कीएस्ट साधु इन धी वर्ल्ड...

- प.पू. वशीभाई



इस चुनरी का रंग सामान्य नहीं है, ये विश्व में काम करेगी...

- प.पू. निर्मलस्वामीजी



गुणातीत स्वरूपों से 'सेवक साधु' की दीक्षा प्राप्त करते पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा



स्मृति भेंट...



हमें बद्धशीश देने गुणातीत साधुता का नूर, आप पधारना 'साधु पर्व' पर ज़रूर!



गुणातीत समाज के लिये काकाजी ने जी योजना बनाई, उसके अंतर्गत ये दीक्षा हुई...
- प.पू. बशीभाई



प.पू. दीदीबा के आशीर्वाद पत्र का पठन करते प.पू. इलेशभाई



प.पू. हंसा दीदी का प्रतिनिधित्व करतीं प.पू. माया बहन, पू. डॉ. नीलम बहन
एवं पवई की प.पू. माधुरी बहन का अभिनंदन

20 अक्टुबर 2021 सायं



शरदीत्सव के अंतर्गत प.पू. दिनकर अंकल का प्राकट्य पर्व...





दिल्ली में सर्वदेशीयता का यह सच में बहुत बड़ा सेन्टर है...

- संतभगवंत साहेबजी



दि. 15.7.1978

स्वामिश्रीजी

जो काम भजन करता है, वह कोई नहीं करता।
सो कोई भी कठिन काम करवाना हो,
अरे! असंभव को संभव बनाना हो,
तब भजन करेंगे, तो होगा ही।

- पप्पा

दि. 20.10.2021, बुधवार
शरदपूर्णिमा-2077

स्वामिश्रीजी

हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी, हे पप्पाजी
आज हम हर्ष के झूले में झूलते हुए गा रहे हैं
हे धन्य आज की पल खूब सुहानी
हे आपको दें प्रेम से बधाई रे धन्य आज की...
ओहोहो योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज ने
संकल्प किया है, तो उसके प्रथम सोपान में
परम पूज्य गुरुजी, अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की प्रागट्य तिथि
शरदपूर्णिमा के दिन पू. नंदिशभाई (आनंद), पू. योगीभाई, पू. गौरवभाई (सर्जन) को भागवती दीक्षा
जो दे रहे हैं,
उसका दिव्य आनंद हम अनुभव कर रहे हैं
और
हे सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान, हे शास्त्रीजी महाराज, हे योगीजी महाराज,
हे काकाजी महाराज, हे पप्पाजी महाराज, हे बा, हे हरिप्रसादस्वामी महाराज,
आपसे प्रार्थना करते हैं कि दीक्षा ग्रहण करने वाले युवक
काकाजी, पप्पाजी और गुरुजी के वारिसदार बनें
और
अनंत को एकांतिक धर्म सिद्ध करवाने का कल्याणकारी कार्य ही करें



आशीर्वाद ऐसे बरसाएं।

हंसा दीदी, देवी बहन, ज्योत की बहनों के

जय श्री स्वामिनारायण!

संतों की दीक्षा विधि पूर्ण होने के बाद **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** को 'सेवक संत' दीक्षा देने का कार्यक्रम शुरू हुआ। प.पू. वशीभाई ने उन्हें संकल्प कराया और गुणातीत संतों एवं वडील संतों से मंगल स्वरूप कलावा बंधवाने के बाद, गुरुमंत्र, कंठी, ड्रेस, बेंच एवं पूजा प्राप्त की। तत्पश्चात् तीनों संतों एवं डॉ. दिव्यांग ने आरती करके साक्षात् दंडवत् प्रणाम किया।

खूब सौभाग्य की बात थी कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्य दिन के मंगल अवसर पर गुणातीत परंपरा के सभी प्रत्यक्ष स्वरूप दीक्षा विधि के अवसर पर अपने दर्शन-सेवा-समागम का लाभ देने के लिये विराजमान हुए। सो, उन्हें गुणातीत का ही साक्षात् स्वरूप मान कर, **नवदीक्षित संतों** एवं **डॉ. दिव्यांग** ने पूजन करके उन्हें हार अर्पण किया। बहनों के विभाग में **पू. स्वाति दीदी** और **पू. बाती दीदी** ने हार अर्पण किया। बहनों द्वारा बनाये प्रत्येक हार के पृष्ठ भाग में **लाँग लिव साहेबजी, गुरुजी, प्रेमस्वामीजी, निर्मळस्वामीजी, दिनकरभाई, हंसा दीदी...** ऐसी प्रार्थना के साथ सभी के नाम लिखे थे। तत्पश्चात् पू. डॉ. दिव्यांग ने प.पू. प्रेमस्वामीजी के लिये बनाया भजन 'जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि...' पुनः प्रस्तुत किया।

भजन के बाद **संतभगवंत साहेबजी** ने आशिष दी—

...आज बहुत महामंगलकारी दिन। 237 साल पहले साकार ब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी भादरा में प्रगट हुए। वैसे तो योगीजी महाराज कायम खुश ही रहते थे, लेकिन इस दिन का प्रभाव ऐसा था कि बहुत-बहुत खुश रहते थे।

निर्मळस्वामी जब गोंडल में कोठारी थे, तब हम युवक स्वयंसेवक के रूप में वहाँ जाते थे। बापा खूब उमंग-उत्साह से पर्व मनाते थे। सुबह 5 बजे से लेकर रात को 12 बजे जब प्राकट्य पर्व की आरती होती, तब तक बापा आशीर्वाद देते रहते। उस दिन की स्मृति होती है, क्योंकि इसकी महत्ता बहुत है।

मानव जब से वानर में से मानव बना है, तब से सुख की दौड़ में है और उसमें सायन्स की टेक्नॉलोजी द्वारा कितनी सुविधा प्राप्त कर ली है। 50 साल पहले हम कल्पना नहीं कर सकते थे कि इतनी सुख-सुविधा होगी।

पूरा विश्व सायन्स टेक्नॉलोजी द्वारा सुख की खोज में था, लेकिन सुख तो आत्मा के



साथ जुड़ा हुआ है। टेक्नॉलॉजी ने फिज़िकल शरीर को सुख दिया है, आत्मा तो वहीं की वहीं है। उस आत्मा को आत्मा-परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होगा, तब सुखी होगी।

उसके लिए स्वामिनारायण भगवान स्वयं मानव रूप धारण करके प्रगट हुए और साथ में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को धरती पर लाकर वरदान दिया कि ऐसे साधु द्वारा मैं ब्रह्मांड में अखंड प्रगट रहूंगा, रहूंगा, रहूंगा... उस समय महाराज ऐसा बोले थे कि मेरे रहने का धाम ये भादरा वाले गुणातीत हैं। लेकिन यह बात सब पकड़ नहीं पाए।

हम पर शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने बहुत बड़ी कृपा की है कि वही बात अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना के द्वारा हम सबके हृदय में स्थापित की कि **ऐसे गुणातीत साधु के द्वारा प्रभु अखंड हैं। उनके साथ आत्मबुद्धि और प्रीति करो, दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा में रहो।**

जो सुख प्राप्त करने के लिए मानव लाखों साल से घूम रहा था, वो आपको प्राप्त हो जाएगा।

जब तक देहभाव है, अहंकार है तब तक ये सुख प्राप्त नहीं होता है। गुणातीत सत्पुरुष में जुड़ जाने से वो अहंकार चला जाता है। आश्चर्य होता है कि ये सीधी-साधी समझ, हम पकड़ नहीं पाए। इसलिए बार-बार जन्म-मरण के चक्कर में घूमना पड़ता है। शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज ने काका-पप्पा, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी, प्रेमस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई व संत बहनों के द्वारा हम सबके हृदय में यह ज्ञान स्थापित किया, तो आनंदपूर्वक हमारी साधना हो रही है। आमतौर पर सात्त्विक धर्म में सब सात्त्विकभाव वाले ज्यादा होते हैं। पर, ये अक्षरधाम की सभा में गुण से पर के अक्षरमुक्त हैं। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने में सात्त्विकभाव वाले यह देख कर बहुत दुःखी होते हैं कि आप सभा में खा रहे हो वगैरह-वगैरह... अरे! वो मूर्ति का सुख दे रहे हैं। गुरुजी नहीं, गुरुजी के साथ जुड़े हुए सभी के प्रति निर्दोषभाव—अक्षरधाम का जो भाव है, वही रियालीटी में स्पीरीच्युअलिटी की प्रोग्रेस है। उससे आध्यात्मिक मार्ग में हमारी प्रगति हो रही है...

गुरुजी ने उत्सव का थीम पीकॉक (मोर) दिया और बताया कि जप, तप, दान और व्रत जैसे कितने साधन करो, वो आपको सात्त्विकभाव तक ले जाएंगे, लेकिन सात्त्विकभाव तक अहंता, ममता के कारण सुख है ही नहीं। गुणातीत की दृष्टि मोर पर पड़ी, वैसी हम पर हो जाए, तो हम सुखी हो जाएंगे क्योंकि आत्मा में कारण देह की जो गाँठ पड़ी है, वो भस्म हो जाती है।

काकाजी-पप्पाजी ने हमारे गुणातीत ज्ञान का फाउण्डेशन किया है। इस बात का पप्पाजी ने जो इन्टरप्रीटेशन किया है, वो किसी शास्त्र या ग्रंथ में नहीं मिलेगा।



पप्पाजी ने बताया कि मोर पर शिकारी ने 18 बार फायर किया था, पर मोर को कुछ नहीं हुआ और शिकारी चला गया। किसी ने प्रश्न पूछा कि शिकारी ने 18 बार क्यों वार किया, 17 बार या 19 बार क्यों नहीं और 18 बार करके फिर क्यों बंद कर दिया? पप्पाजी ने बताया कि जब-जब शिकारी फायर करता था, तब-तब मोर कूद जाता था। जब उसके भीतर निश्चिंतता आ गई कि शिकारी जितना भी फायर करे, लेकिन मुझे कुछ नहीं होने वाला है, मेरे प्रभु मेरे साथ हैं, तो उसका डर निकल गया और शिकारी चला गया। जब तक देहभाव का ये डर है, तब तक हम दुःखी हैं। उसे निकालने के लिए यहाँ हॉल में ब्रह्मसूत्र लिखा है— **‘आप यहाँ आए हो न, इतना काफ़ी है। अब बेफ़िक्र हो जाओ।’** आपने (संतों ने) गुरुजी के प्रति हेत-प्रेम से अपना जीवन समर्पित किया है, इतना काफ़ी है; अब बेफ़िक्र हो जाइए। सब कुछ गुरुजी करेंगे। हमें क्या करना है? **बस गुरु की आज्ञा में रहना और वे जो बोले वो अक्षरशः करना, तो हँसते-खेलते गुणातीतभाव सिद्ध हो जाएगा।** पहले तो मार खाते और भगवान भजते। गुणातीतानंदस्वामी कहते आज तो सोते-सोते हलवा खाकर, 2-5 नौकर हमारी नौकरी करें, ऐसे भगवान भजना है।

ऐसा सुख कहीं देखा है? ऐसा किसे प्राप्त हो कि जिसे स्वरूपनिष्ठा दृढ़ हो, अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना सिद्ध हो, गुरु के प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति हो, गुरु की आज्ञा में रहता हो और संबंध वालों में निर्दोषभाव रख कर, सेवा-भक्ति करता हो, उसके लिये यह बात साकार होगी। यह बात पकड़े रखना।

आप तीनों बहुत नसीबदार-भाग्यशाली हैं। आज गुणातीत का प्रागट्य पर्व, हरिप्रसादस्वामी, प्रेमस्वामी का दीक्षा दिन है, दिनकरभाई का 77वां प्रागट्य दिन है और गुरुजी के ‘साधु पर्व’ की आज से शुभ शुरुआत हो रही है। बहुत बड़े दिन पर आपने दीक्षा ली, आपको बहुत-बहुत अभिनंदन... आप बहुत सही मार्ग-बहुत सही जगह पर हो और आपके साथ ये समाज है। ये समाज कितना माहात्म्ययुक्त है! गुणातीतानंदस्वामी बोले थे कि मैंने चारों ओर शक्कर फैलाई, जहाँ हाथ लगाओगे, वहाँ से मिठास ही मिलेगी।

योगीजी महाराज की आज्ञा से 51 साधु बने। गुरुजी ने जब दीक्षा ली, तब का आप फोटो देखना। भीड़ में सब एक-दूसरे के ऊपर घुटने चढ़ा कर बैठे हैं। अभी की तरह ऐसा नहीं कि कोई गातरिया पहनाये, कोई कंठी पहनाये। बस बापा कान में मंत्र देकर गातरिया ओढ़ा रहे थे, कितना अभाव था। अब तो इतनी फेसीलिटीज़ हैं कि आप सोच नहीं सकते। ये संतों और गुरुजी ने इतनी मुश्किलों में साधना की है। पप्पाजी कई बार दादर मंदिर की बात करते हुए



बताते थे कि कई ऐसा कहते कि संतों को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए घी नहीं खाना चाहिये। कोई घी का डिब्बा लाया होगा, तो पप्पाजी ने संतों को दिया कि रोटी घी चुपड़ कर खाना। ऐसा हुआ कि घी का डिब्बा खुला रह गया और उसमें चूहा गिर गया। सो, डॉट पड़ने के डर से घी गरम करके टॉयलेट में डाल दिया। फिर घी तो जम गया... ऐसी मुश्किलों में संतों ने साधना की है। लेकिन, योगीजी महाराज के प्रति इतना प्रेम था और काकाजी-पप्पाजी, हर्षदभाई सबका बॉम्बे में जतन था। इतने माहात्म्य में थे कि व्यवस्था क्या है? खाना क्या है? कुछ याद नहीं, कोई सुविधा की ज़रूरत नहीं है। **सुविधा की ज़रूरत तब होती है, जब माहात्म्य की कसर हो जाती है।** जब माहात्म्य भरा रहेगा, तो प्रभु और गुरु के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देगा। **माहात्म्य बढ़ता रहे उसके लिए क्या करना? सत्संग, स्वाध्याय, वचनमृत, स्वामी की बातें और गुरुजी की कथा सुनना।** सत्संग से माहात्म्य बढ़ता है और माहात्म्य बढ़ने से सेवा में आनंद आएगा। साथ ही भजन व प्रार्थना में श्रद्धा रखेंगे, विश्वास ज़्यादा बनेगा। फलतः भजन ज़्यादा होगा। ऐसे स्पीरीच्युअल प्रोग्रेस होती है। तो माहात्म्य में रहना। इसके लिए कथावार्ता, धुन-भजन, सेवा करना। जवान हों, तो सेवा करते ही रहना। **हमसे योगीजी महाराज इतनी सेवा कराते और कहते की जवानी को जीतना है। आप जवान हो, तो सेवा करते रहना। यहाँ तो कितनी सेवा है, 'ना' नहीं बोलना। बस 'हाँजी', क्या बोलना 'हाँजी'। योगीजी महाराज ने यही सिखाया कि कभी 'ना' मत बोलो।** सेवा के टाइम में भागदौड़ आये, तब भगवान को प्रसन्न करने के लिए करते रहेंगे, तो गुरुजी की प्रसन्नता मिलेगी। गुरुजी निश्चित हो जाएं कि हमारे लड़के हैं न। ये **'आनंदी दीदी ने गुरुजी को कितना प्रसन्न किया है।'** गुरुजी अपने साधु के नियम में रहते हैं; वो भी अपनी मर्यादा में रहती हैं, लेकिन भावात्मक एकता—वो भावात्मक एकता क्या? आत्मा-परमात्मा का ज्ञान है कि भले देह से स्त्री और पुरुष हैं, लेकिन ये भाव से तो पर होना है और प्रसन्नता प्राप्त करनी है। तो गुरुजी को कितना विश्वास, कितनी श्रद्धा है आनंदी दीदी बहनोँ पर! इन सब युवा संतों, सब भक्तों पर। तो इससे सबकी प्रोग्रेस होती रहती है।

दिल्ली में सर्वदेशीयता का यह सच में बहुत बड़ा सेंटर है। आपको और आपके माता-पिता को अभिनंदन। आज दिव्यांग ने सेवक के रूप में दीक्षा ली, उसको भी अभिनंदन। गुरुजी जब अशोकविहार में रहने के लिये आए, तो कोई भगत यहाँ नहीं था। काकाजी आते थे, वो मकान जहाँ गुरुजी रहते थे, वो दर्शनीय है। निशि और बंसरी की मम्मी कौशिक आंटी को काकाजी के साथ खूब प्रेम था। काकाजी वहीं ठहरते थे, हम भी वहाँ रहे हैं। उस



समय अनिल, निशि और बंसरी ने बहुत सेवा की। वो घर ही पूरा अक्षरधाम बन गया। बहुत अच्छा मंदिर बनाया था। दिव्यांग उसी घर में जन्मा, पूर्व की जबरदस्त आत्मा है। छोटा था, तब से गुरुजी के साथ रहा है। तूने शादी की मुझे आश्चर्य हुआ, लेकिन वो लड़की भी पूर्व जन्म की साधु होगी। तो आप दोनों मिलकर अब भगवान भजो। आप और हमारा डॉ. कैलाश सिंह दोनों डॉक्टर सबका खूब जतन करते हैं। आज सही सेवक के रूप में दीक्षा ली, खूब-खूब अभिनंदन। जब डॉक्टरस्वामी साधु बने, तो पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय में अचंभा हो गया था कि डॉक्टर साधु बना। आज डॉक्टर साधु हुआ, तो कोई नोट भी नहीं करता। अहोभाव होना चाहिए कि डॉक्टर साधु बना, तुझे तो अभिनंदन, पर हमारे अनिल और निशी को ज्यादा अभिनंदन। दोनों ने दिव्यांग को प्रभु चरण में सौंप कर बहुत बड़ी सेवा की है।

आज दिनकरभाई का प्रागट्यपर्व। सबकी ओर से दिनकरभाई को भी खूब अभिनंदन। वो भी पूर्व के साधु हैं। काकाजी स्वरूप बन गए। 1973 में फर्स्ट टाइम काकाजी के साथ सेवा में मेरा अमेरिका जाना हुआ, तो हमारी पहली ट्रीप दिनकरभाई के यहाँ हुई थी।

विद्यानगर में जिस कॉलेज में मैं पढ़ता था, दिनकरभाई उसी कॉलेज में मुझसे दो साल पीछे थे। उनके पिताजी वीरसद वाले ज्ञानजीस्वामी के बहुत बड़े भक्त थे। दिनकरभाई भी कॉलेज में नियम-धर्म में घुस्त रहते हुए इंजीनियर हुए। अमेरिका गये तो भी ऐसे ही रहे और ऐसा मुझे लगता है कि सुधा बहन के जरिये काकाजी उन्हें ढूँढने के लिए अमेरिका गए।

काकाजी अपने प्रवचन में कोठारीस्वामी-प्रेमस्वामी, अश्विनभाई-शांतिभाई और परदेश में दिनकरभाई-हिम्मतस्वामी इन छः जनों को याद करते। दिनकरभाई काकाजी के कृपा पात्र हैं और इनका जीवन भी ऐसा है। वो एबट लॅबोरेटरीज में बहुत बड़ी पोजीशन पर थे। उन्हें गुडमैन का खिताब मिला था। हम सब 'गॉडमैन' कहते हैं। दिनकरभाई सब जगह पर जाकर सत्संग करते हैं। गुणातीत समाज का कोई भी उत्सव ऐसा नहीं है कि जहाँ दिनकरभाई हाज़िर न हों। दिनकरभाई को खूब माहात्म्य है। आपने सुना होगा कि अभी ऐसा साफ्टवेयर डेवलप हुआ है कि पार्लियामेंट में या कहीं अगर मैं गुजराती में बोलूँ और आप हिंदीभाषी हो, तो आपको हिन्दी में सुनाई देगा। इंगलिशभाषी हो तो इंगलिश में सुनाई देगा। प्रवचन किसी भी भाषा में ऑटोमेटिक कन्वर्ट हो जाता

है। ऐसे ही दिनकरभाई को कोई भी उल्टी-सुल्टी बात करो, तो उन्हें पॉज़ीटीव ही सुनाई देता है। इनमें भगवान ने ऐसी डिवाइस फिट की है। कोई भी हो, उसका गुण ही देखते हैं, अच्छा ही बोलते हैं और अच्छा ही अर्थ निकालते हैं। कोई



बेकार से बेकार काम हुआ होगा, फिर भी अच्छा ढूँढ लेते हैं, ऐसी डिवाईस है। आज आपका जन्मदिन है, तो सबको ऐसा सिखा दो। **राजा, भक्तों में आपके जैसी डिवाईस फिट हो जाये, तो साधना आसान हो जाए और सब सुखी-सुखी हो जायें।** अखंड आनंद में रहते हैं, ऐसे दिनकरभाई के प्रागट्य पर्व और गुरुजी का 85वां प्रागट्य दिन 'साधु पर्व' के रूप में मना रहे हैं। गुणातीतानंदस्वामी कहते कि साधु होना और साधुता सीखनी। **साधुता के जो शिरमौर बने हैं, ऐसे गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर हम जरूर आएंगे।** देखो, हम सबको फ़ायदा है, क्योंकि हम आने का सोचेंगे, तो वे कोरोना को भगा देंगे। गुरुजी से ऐसी प्रार्थना करते हैं कि उसे सूर्यलोक में रवाना कर दो। भगवान हमारी रक्षा में हैं। आज कितने सारे पर्व एक साथ मनाये। कितने सारे संतों के आशीर्वाद मिले।

तो, ये दीक्षार्थी बहुत भाग्यशाली हैं, आफलातून विधि हुई। आप सब हंसते-खेलते गुरुजी रूप बन जाओ और गुरुजी के कार्य को डबल करो, ऐसा वे आपको बनायें ऐसी सब संतों और भक्तों से प्रार्थना है। अश्विनभाई ने भी इंग्लैंड से आशीर्वाद भेजा है और आपको जय स्वामिनारायण कहा है... परम साधुता प्राप्त करके प्रभु का आनंद लो, प्रेमस्वामी, गुरुजी, निर्मळस्वामी, दिनकरभाई, शांतिभाई सब ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीर्दान दिया —

...साहेब ने एक राह-रास्ता दिखाया। कौन सा रास्ता? एक बार काकाजी ने मेरी डायरी में लिख कर दिया था, उसमें पहला सन्टेन्स लिखा था— **‘मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य बिंदु प्रभु का साक्षात्कार’**, साहेब ने वो रास्ता दिखाया।

भीतर में जहाँ धबक-धबक होता है, वहाँ भगवान अखंड विराजमान हैं। बाहर जो मानवस्वरूप में विराजमान हैं, उनके साथ एकता करके फिर व्यापक में हर जगह उन्हें देखना; वो साधना का पूरा प्रोसेस है।

हमें ज़्यादा कुछ समझ आये या न आये, पर इतना जरूर समझें कि प्रभु प्रगट हैं, मेरे हैं और मेरा अहित होने नहीं देंगे। सुहृदभाव व सरलता से साथ में रहे हुए मुक्तों की बातों-सूचन, इनके कहे का स्वीकार कर लें। जिसे साहेब ने कहा—‘हांजी-हांजी’। मुक्त कुछ कहें, तो मन तुरंत बोलेगा क्यों? कैसे? नहीं? लेकिन वो सब बातों को ठुकरा कर ‘हांजी’ कहें। भले पसंद आया हो या न आया हो और फिर भजन करते रहें। हमें जो बात स्वीकार नहीं होती होगी, जिसके कारण स्वीकार नहीं होती होगी वो कसर पिघलती जाएगी, डिज़ॉल्व होती



जाएगी और साधु की बात का स्वीकार सहज होता जाएगा। सो, और हमें कुछ नहीं करना है, जहाँ हमें रखा है वहाँ, वहाँ हम सब एक हैं। हम सबको एक होना है, एक रहना है, एकता का आनंद लेना है, उसी लक्ष्य से हम दौड़ते रहें। **स्वामीजी का ये स्पेशियल वाक्य है 'दौड़ता रहेजो'। काकाजी हमेशा मुझे खास बोलते रहते थे— 'मैं तुझे निर्दोष मानता हूँ, तू मुझे क्यों नहीं मानता?' इसी तरह हमें भी समझना है कि भगत लोग, शिष्य लोग जब हमें निर्दोष समझते हैं, दिव्य समझते हैं तो हम इन्हें क्यों न मानें? ये मानकर हम चलते रहें, ऐसा साहेब हम सबको आशीर्वाद दे जाएं यही प्रार्थना।**

प.पू. प्रेमस्वामीजी ने शुभाशीष दी —

...अक्षरब्रह्म के अवतार — गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन! ऐसे गुणातीत स्वरूप दिनकरभाई का प्रागट्य दिन और गुरुहरि स्वामीश्री का दीक्षा दिन! त्रिवेणी संगम में हम बैठे हैं। साहेबजी और गुरुजी ने बहुत-बहुत आशीर्वाद दिए हैं। जीवनभर यही बात पकड़ कर रखनी है। गुणातीतानंदस्वामी ने तीसरे प्रकरण की 32 या 33 में कहा है कि साधक के लिए ये बात प्राण समान है।

गुणातीतानंदस्वामी की भावना वो है कि सत्पुरुष के साथ हेत तो होता है, लेकिन उनका विश्वास नहीं होता है। गुणातीतानंदस्वामी से किसी ने पूछा कि स्वामी हेत होने पर विश्वास क्यों नहीं होता है? तब गुणातीतानंदस्वामी ने बताया कि मावा भक्त को मेरे साथ हेत है, लेकिन मेरी बात में विश्वास नहीं होता है और मैं जो बात करता हूँ, उसके बारे में दरबान से पूछता है कि स्वामी ये बात बताते हैं। तो दरबान बोला—स्वामी भी बड़े और उनके गप्पे भी बड़े।

फिर गुणातीतानंदस्वामी ने बात बताई कि विश्वास होता है, लेकिन निष्कपटभाव नहीं होता है। यदि निष्कपटभाव होता है, तो जीव ब्रह्मरूप हो ही जाता है।

ये बातें प्राण समान हैं। गुरुजी ने और साहेबजी ने जो बात बताई वो सब साधकों के लिए प्राण समान हैं।

जहाँ भी हों, वहाँ हमारे सत्पुरुष भगवान का स्वरूप हैं। इनका वचन ही ध्यान, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य है। सब कुछ इनके वचन से होता है और जैसे साहेबजी ने बताया कि वो बात विश्वासपूर्वक पकड़ कर निष्कपटभाव से इनके साथ हम संबंध करें।

गुरुजी के जीवन में हमने देखा है। पहले अक्षरभुवन में थे, तो गुरुजी बहुत शरारती थे, इन्होंने बहुत चरित्र किये। लेकिन महंतस्वामी को बताकर किए हैं; कोई बात छिपा कर



नहीं की है। दूसरी बात कुछ भी मन में विचार आता था, तो जब योगीबापा आते थे तो सुबह 4.30 बजे बापा के रूम में जाकर, वो भजन करते और बापा उनसे पूछते कि मकंद कुछ पूछना है? तब गुरुजी अपना दिल खोल कर सब बात कर लेते थे। जो हृदय में है, वो बात बापा को बता देते थे। वो निष्कपटभाव है। बापा के बाद काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के साथ ऐसा संबंध इन्होंने बनाया। और कुछ करना ही नहीं है, **सत्संग बहुत सरल व इज़ी है। हम लोगों ने अपनी बातों से इसे कठिन बना दिया है, जबकि बहुत सरल है।** बस, यही बात है कि संत के साथ यदि हम निष्कपटभाव से संबंध करेंगे, तो इनका प्रेम बढ़ जाएगा। हमें घबराहट लगती है कि अगर इनको मन की बात बताऊंगा तो क्या सोचेंगे? ऐसा तो है ही नहीं; वे हमारे मन, बुद्धि, चित्त और अहं को हथेली में देखते हैं। हमारा ही नहीं बल्कि अनंत ब्रह्मांड के अनंत चैतन्य को एक साथ में देख सकते हैं, इतना सामर्थ्य इन लोगों में है। हमें जो घबराहट रहती है वो हमारा अहं है। साहेब ने बताया कि यदि हम ये अहं छोड़ देते हैं और उनकी गोद में बैठ जाते हैं और मन की बात बड़े प्यार से क़बूल कर लें कि हमने ग़लती की है—हो गई है; ऐसा न कहें। यदि हम कहते हैं कि हमसे ग़लती हो गई है, तो वो सात्विकता है। काकाजी कहते कि यह मन की चोरी है, लेकिन ऐसा कहें कि मैंने किया है; आप कृपा करो, इतना ही कहना है। जैसे **गुरुजी ने बहुत भजन किया है। माला फिराते-फिराते इनकी उंगली में गड़डा पड़ गया था—मैंने देखा है।** इतना भजन, इतनी माला इन्होंने फिराई है।

तो दो चीज़ें ही करनी हैं—‘सत्पुरुष का समागम—समागम का मतलब है कि बात तो सुनते हैं, लेकिन एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकल जाती है। पर, बात को दिल में रखना है। इनके पास मन खुला करके, इनके चरणों में फिर उस बात को भूल जाना है। इनके विश्वास पर छोड़ देना है। हाँ, हमें जाग्रत ज़रूर रहना है कि दोबारा वो ग़लती हमसे न हो।’ उसके लिए हम प्रार्थना-भजन करें। स्वामीजी कहते हैं—‘जिसे भगवान चाहिएँ उसे मैं भगवान दे दूंगा, जिसे ऐश्वर्य चाहिए उसे ऐश्वर्य, जिसे शिष्य चाहिए उसे शिष्य और जिसे लक्ष्मी चाहिए उसे लक्ष्मी दूंगा।’ हम तो भगवान लेने के लिए निकले हैं। भगवान को रखना है। हमें गुणातीतभाव में रहना है और इस भाव में रखवाने के लिये हमें ऐसे पुरुष मिले हैं।

पहली बात - हमें दो हाथ जोड़कर स्वरूपलक्ष्मी सरलता रखनी है।

दूसरी बात - स्वलक्ष्मी और स्वरूपलक्ष्मी जीवन बनाना है,

तीसरी बात - इनके पास किसी भी प्रकार का कपट नहीं रखना है।



चौथी बात - इनकी बात पर विश्वास रख कर भजन करना है।

ये चार बात पकड़ कर रखेंगे, तो गुरुजी हमें ज़रूर-ज़रूर सुखी कर देंगे। सुखी का मतलब है— किसी का कभी अभाव न आये, किसी के प्रति भावफेर न हो। उससे आगे, हमारा जीवन निश्चित हो जाए और इससे आगे की बात है कि हृदय में सबके लिए प्रेम का प्रवाह बहे— **‘सुहृदम् सर्व भूतानां’** ऐसा हमारा जीवन बन जाता है। भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, स्वामीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी, साहेबजी-गुरुजी, दिनकरभाई सबके चरणों में यही प्रार्थना करनी है।

दिनकरभाई ये सब करके बैठे हैं। काकाजी से करीब हज़ारों माइल दूर रहने पर भी कैसा सेवन किया? अंतर्दामी और सर्वज्ञ मानकर सेवन किया। कितने भी प्रसंग इनके जीवन में आए, लेकिन इनका हास्य कभी भी कम नहीं हुआ। किसी के प्रति दुर्भाव नहीं हुआ, अभाव नहीं आया। साहेब ने बताया हमेशा पॉज़ीटिव जवाब। किसी ने अपमान किया फिर भी पॉज़ीटिव। हर परिस्थिति में इनके जीवन में समता का दर्शन होता है। साधुता तो है ही। परम सुहृद बन कर हमारे साथ जी रहे हैं। तो इन सबके चरणों में इतनी प्रार्थना है कि हम सबके ऊपर आज ऐसी कृपा बरसायें कि हम सबका जीवन भी ऐसा बन जाए...

तत्पश्चात् पू. नवीनभाई शाह, पू. दालिया साहेब, पू. घनश्यामभाई अमीन (पवई) और पू. केतनभाई (शिकागो) एवं पू. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई) ने तीनों संतों एवं पू. डॉ. दिव्यांग को सभी की ओर से हार अर्पण किया।

प.पू. गुरुजी की इच्छा थी कि दीक्षाविधि में पधारे स्वरूपों एवं वडील संतों को कुछ **‘स्मृति भेंट’** दी जाये। सो, शरदपूर्णिमा— मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्य पर्व का माहात्म्य दर्शाते हुए, अक्षरदेरी के आकार की चाँदी की फ्रेम में ‘स्वामी’ की मूर्ति पू. सुहृदस्वामी एवं पू. अक्षरस्वामी ने सभी को दी। मूर्ति के पीछे **‘साधु पर्व’** के प्रतीक चिन्ह के साथ प्रार्थना लिखी थी—

हमें बख़्शीश देने गुणातीत साधुता का नूर, आप पधारना ‘साधु पर्व’ पर ज़रूर...

सभा के अंत में प.पू. प्रेमस्वामीजी के लिये बनाई गुजराती एवं हिन्दी स्तुति वंदना का गान पू. मनोजभाई सोनी ने पुनः किया और **हरिधाम के उत्तराधिकारी** के रूप में आये **प.पू. प्रेमस्वामीजी**

को **पू. विज्ञानस्वामीजी** ने सभी की ओर से साक्षात् दंडवत् प्रणाम करने की भावना प्रकट की। तब दोनों का दासत्व देखते ही बनता था कि दोनों ने एक-दूजे को प्रणाम किया...

विसर्जन प्रार्थना के साथ इस विशिष्ट सभा का समापन हुआ।

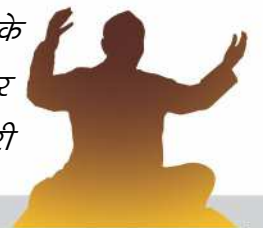


रात्रि 8 बजे शरदपूर्णिमा—मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्य पर्व के अंतर्गत प.पू. दिनकर अंकल का 77वाँ प्राकट्य दिन मना कर, भक्ति अदा करने का सभी को अद्भुत लाभ मिला था। सभा की शुरुआत में गुरु गुणातीत के प्राकट्य की महत्ता बताती भजनमाला से पू. इलेशभाई ने पूरा वातावरण दिव्यता से भर दिया। तत्पश्चात् प्यारे उज्ज्वल ने 'क्या कहूँ कौन-सी दौलत है गुरु...' भजन प्रस्तुत करके स्वरूपों की प्रसन्नता पाई।

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की अस्थियों का विसर्जन करने हेतु, प.पू. प्रेमस्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी संतों एवं सहिष्णु भाइयों के साथ ऋषिकेश गये थे। तब 17 अक्टुबर को प.पू. दासस्वामीजी वहाँ गिर गये थे। उन्हें घुटने में फ्रैक्चर हुआ, तो ड्राईविंग की सेवा में गये दिल्ली मंदिर के आत्मीय पू. जोधा भइया तुरंत ही उन्हें दिल्ली लेकर आये। साकेत के मैक्स अस्पताल में पू. अनुज दुरेजाजी के बड़े भाई पू. डॉ. कमल दुरेजाजी ने उनका ऑपरेशन किया। 20 अक्टुबर की शाम को वे अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद मंदिर आने पर सीधा 'कल्पवृक्ष' हॉल में श्री ठाकुरजी का दर्शन करने आये।

तत्पश्चात् पू. मनोजभाई सोनी ने मूल अक्षरब्रह्म के प्राकट्य के माहात्म्य को उजागर करते हुए सभा को संबोधित किया—

...दो दिन से दिल्ली स्थित ताड़देव के इस पवित्र धाम में प्रति क्षण केवल ब्रह्मानंद का अनुभव हम सब कर रहे हैं। इस स्थान की अपरंपार महिमा है। यह स्थान असामान्य है। इस स्थान की महिमा भी अप्रतिम है। सबसे बड़ी बात यह है कि प.पू. गुरुजी ने स्वामिनारायण संप्रदाय के और विशेषतः गुणातीत समाज के इतिहास की धरोहर को इस स्थान में इस भव्य कलात्मक मंदिर में बहुत ही गहरी सूझ-बूझ के साथ संजो कर रखा है। चर्मचक्षु से जहाँ भी नज़र जाती है, वहाँ आत्मा के उत्थान के कुछ न कुछ उपदेश को प्राप्त करती है। मेरा आना तो कम ही हुआ है, किन्तु जब-जब यहाँ आया, तो हमेशा यह अनुभव हुआ कि मानो स्वामिनारायण संप्रदाय और विशेषतः गुणातीत समाज के इतिहास की धरोहर की गोद में आकर बैठ गए हैं। समग्र विश्व में बहुत सारे मंदिर हैं, अनेक स्वामिनारायण मंदिर भी विद्यमान हैं। अनेक मंदिर हैं जहाँ श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज मध्य मंदिर में विराजमान हैं और जय-जयकार होती है, लेकिन इस मंदिर की कुछ अलग ही आभा है। गुणातीत समाज के प्राणाधार स्वयं श्री काकाजी महाराज यहाँ प्रति पल जीवंत हैं। उनके धबकार को प्रति पल महसूस किया जा सकता है। इस क्षण भी हम सब अगर भीतर में झाँकें, तो क्या यह अनुभव नहीं हो रहा है कि विश्व आज जिस महामारी



से जूझ रहा है, अनेकानेक आधि-व्याधि-उपाधियां चारों ओर भयानक स्वरूप लेकर हमारे सामने हैं, लेकिन हमें एक अद्भुत शांति का अनुभव हो रहा है। परम दिव्य आनंद की सहज अनुभूति होती है। इसका मूल कारण स्वयं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज यहाँ पर विराजमान हैं, जिनके द्वारा श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का अद्वैत तत्त्व भी यहाँ सांगोंपांग प्रत्येक कण में विराजमान है।

पता नहीं महिमा की कौन-सी जड़ी-बूटी **प.पू. गुरुजी** ने यहाँ के संतों-साधकों को पिलाई है कि उनका व्यवहार देखते हैं, उनकी आंखों में आंखें डालकर जब देखते हैं, तो नितांत आत्मीयता, नितांत प्रेम, नितांत दिव्यभाव, नितांत निर्दोषबुद्धि सहजरूप से बह रही होती है, छलक रही होती है।

दुनियाभर में मैनेजमेंट की बहुत महिमा कही जाती है। लेकिन इस स्थान पर महिमा का मैनेजमेंट होता है, महिमाभरा मैनेजमेंट होता है, महिमा से हरा-भरा जीवंत मैनेजमेंट होता है। सो, आज जिस पर्व को हम मना रहे हैं, वो पंच महापर्व का अद्भुत सुयोग है। प.पू. योगीजी, प.पू. सर्जनजी, प.पू. आनंदजी ने कल पार्षदी दीक्षा ग्रहण की और आज भागवदी दीक्षा में उनके दर्शन हमें प्राप्त हुए। ये अपने आप में **पहला** और सुहावना उत्सव है। हम इस उत्सव को **‘योगी-सर्जन-आनंद’** नाम दे सकते हैं। क्योंकि दो दिन से हम यही तो कर रहे हैं—योगीजी महाराज के सर्जन का आनंद उत्सव! **‘योगीसर्जनानंद उत्सव’**।

इन तीन युवाओं को मेरा साष्टांग दंडवत् प्रणाम है। ऐसे समय में वे दीक्षित हुए हैं, जब श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का दिगदिगंत में जय-जयकार हो रहा है और इन्हीं के द्वारा आने वाली कई दशाब्दियों के दौरान यह जय-जयकार का नाद गगनभेदी होने वाला है। गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज और गुणातीत समाज के सर्व स्वरूपों का जो दिव्य कार्य है, उनके वाहक के रूप में ये तीन संत सेनानी नारायणी सेना में आज जुड़े हैं। इन तीनों के माता-पिताओं को हम सबका हृदय वंदन है...

दूसरा महोत्सव—ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी महाराज का दीक्षा स्मृति दिन!

तीसरा महोत्सव—प.पू. प्रेमस्वामीजी महाराज का दीक्षा स्मृति दिन!

चौथा महोत्सव—दिनकर अंकल का प्रागट्य पर्व

और

पाँचवा महोत्सव—अनादि अक्षरब्रह्म स्वामी श्रीगुणातीतानंदस्वामी महाराज का महामंगलकारी प्रादुर्भाव पर्व।

करीब-करीब 18-20 महीनों से कुछ कमी-सी महसूस हो रही थी। मंदिर में जाकर



दर्शन आरती, धुन-भजन व संतों की सेवा से हम अपने आपको वंचित पाते थे।

लेकिन एक सकारात्मक बात यह भी हुई कि महामारी के इस विषम काल ने जिंदगी की बहुत बारीकियां हमें समझा दी। टेक्नोलॉजी के माध्यम से हम सत्संग से अधिक जुड़ गए हैं। महर्षि श्री अरविंदों ने जिस अति मनस की कल्पना करी थी, अति मनस्क के अपने आप में प्रागट्य का हम अनुभव कर सकते हैं। **यह क्षमता-यह शक्ति श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना की है।** परात्पर परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण श्री सहजानंदस्वामी महाराज के रूप में इस धरातल पर जब अपने तत्त्व का प्रादुर्भाव करते हैं, तो अपने साथ-साथ उसी समय परात्पर अक्षरब्रह्म तत्त्व का भी प्रादुर्भाव करते हैं। **यदि अक्षरब्रह्म उसी समय इस पृथ्वी पर प्रादुर्भाव नहीं करते, तो जैसे संतभगवंत साहेबजी हमें समझाते हैं कि आज जिस जीवंत आनंद का हम अनुभव करते हैं, वो आनंद की सहज अनुभूति नहीं हो पाती।**

हम सबके जैसे बनकर वे ऐसे घुलमिल जाते हैं कि हमें उस परम दिव्य तत्त्व का न तो अनुभव हो पाता है, न उनकी महिमा समझ पाते हैं। लेकिन आज जैसे संतभगवंत साहेबजी बता रहे थे—

‘कोटि-कोटि धन्यवाद हो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को जिन्होंने 3 फरवरी 1952 के दिन जिस दिव्य समाधि अवस्था की अनुभूति की और उसके बाद योगीजी महाराज में प्रगट अक्षरपुरुषोत्तम के अद्वैत तत्त्व का जो साक्षात्कार उन्होंने अनुभूति से पाया, उस साक्षात्कार को सबके साथ सांझा कर दिया और योगीजी महाराज के दिव्य स्वरूप की हमें पहचान कराई।’

मेरी अनुभूति हमेशा यह रही है कि अक्षरब्रह्म सर्वत्र व्याप्त हैं, उज्ज्वल से लेकर हमारे नर्मदाशंकर तक। आज अगर अक्षरब्रह्म के प्रागट्य का उत्सव मनाना है, तो मैं अपने अल्प अनुभव से तो यही समझ पा रहा हूँ कि **सर्वं खलुं इदं ब्रह्म ईशा वास्यमिदं सर्वं।**

एक आखिरी बात करते हुए मैं अपनी वाणी को विराम दूंगा। कभी कोई पूछता है कि केम छो? **हालता ने चालता रस्ते मळे ने कोई पूछे अमस्तूज केम छे, आपणे तो कहिए के अलमस्त मौजमां ने ऊपरथी श्रीहरिनी रहेम छे।** अक्षरब्रह्म प्रगट हैं, सर्वत्र हैं। आप अनुभव करेंगे कि आपके इस शरीर को वायु स्पर्श करती है, तो आप में थोड़ी-सी जाग्रतता आ जाती है; इस वायु के स्पर्श में भी अक्षरब्रह्म का स्पर्श है। तो जो कुछ भी हो रहा है, वो सर्वत्र अक्षरब्रह्म रूप में लीला कर रहे हैं...

गुणातीत स्वरूपों द्वारा किये बेजोड़ परिश्रम की स्मृति करते हुए **पू. विज्ञानस्वामीजी**



ने अंतर से प्रार्थना की—

...दो दिन से हम लोग ब्रह्मानंद कर रहे हैं। पार्षदी दीक्षा और भागवदी दीक्षा दी गई। गुरुजी ने सबको बुला लिया, सबका दर्शन हो गया। भाग्य की बात तो यह है कि मनोजभाई ने बहुत शांति से महत्वपूर्ण विषय बहुत आसानी से समझा दिया। योगीजी महाराज के संपर्क में हम सब आए, तो शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की जो निष्ठा प्रवर्ताई थी, वो सुलभ हो, इसलिए योगीजी महाराज ने जंगम तीर्थ बनाये।

पप्पाजी और काकाजी को अनुभूति कराई कि योगीजी महाराज कौन हैं?

3 फरवरी 1952 के बाद काकाजी ने हम सबके अंदर योगीजी महाराज के प्रति अनोखा भाव उत्पन्न कर दिया कि—

योगीजी महाराज कोई भले-भोले साधु नहीं हैं, वे तो भगवान का स्वरूप हैं। **पप्पाजी-काकाजी की बात सुनने वाले उस समय बहुत कम लोग थे, लेकिन जिन साधकों ने उनकी बात मानी, वे धन्य हो गये।** उस समय बहुत कठिनाई थी, फिर भी इन दो पुरुषों के वचन में विश्वास रखकर संबंध वाले में महाराज देखने की सूझ को उन लोगों ने साकार किया।

मेरी इच्छा ऐसी है कि साहेबजी, गुरुजी, दिनकरदादा, भरतभाई, निर्मळस्वामीजी, प्रेमस्वामीजी के साथ टेबल टॉक में पुराने-पुराने प्रसंग की जो बातें होती हैं, वो सब लिखी जानी चाहिए। हिस्ट्री डिमोलिश न हो जाये, प्रगट रहे कि हमारे बड़ों ने क्या-क्या सहन किया है और इस समाज के सर्जन में कैसी कठिनाईयों का सामना किया। अभी तो वो कठिनाई है नहीं। उस समय की तो कल्पना भी हम नहीं कर सकते... जब ये बातें सुनते हैं, तो ऐसा महसूस होता है कि इन पुरुषों ने कैसे भीड़ा-भक्ति सहन की होगी। स्वामिनारायण भगवान की बात सुनते हैं कि उस समय में बहुत कठिनाई थी और संतों को मार पड़ती थी।

आज के संतों को उस बात की कल्पना भी न हो सके, ऐसी मौज-मजा आज रख दी है। योगीजी महाराज ने कृपा करके जंगम तीर्थ बना दिये। हमारे भाग्य में गुरुजी आए। पहले इनके साथ रहने का बहुत समय मिला था। दिल्ली भी थोड़ा-थोड़ा रहने को मिला और अब भी मिल रहा है। गुरुजी ने कृपा करके ये फंक्शन आयोजित किया, तो ये दर्शन, स्पर्श, सेवा व समागम का हम सब लाभ

ले सकते हैं। **दीक्षा तो हम सबने ली। जो जहाँ है, वहाँ से आगे जाने के लिए सबने मन में कुछ तो पक्का किया ही होगा।** गुरुजी, साहेबदादा, निर्मळस्वामी, प्रेमस्वामी, भरतभाई, वशीभाई, दिनकरदादा और सब प्रगट स्वरूपों से प्रार्थना कि जिसने जो-जो



पक्का किया है, वो सब पार कर सकें। उनकी दृष्टि में आए हैं, तो अपना सुख, शांति, आनंद पक्का है। यह कब से लेना है, वो हम पर निर्भर करता है। खुद की चौइस है।

तो, आज गुरुजी और सब स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि आप जो कराना चाहते हो, वो हम आसानी से कर पाएं। हमारा मन, बुद्धि, चित्त, अहं और इंद्रियाँ-देह आपके अनुरूप चलने की जो तैयारी बता रहे हैं, उसमें कुछ बाधा न आये और मंजिल आसानी से हम पार कर लें। इससे आपको भी शांति रहेगी और हमें तो सुख मिलेगा ही मिलेगा। सुखी होने में हमारी जो कमी है, उसके लिये कृपा करके आप हमारे लिए भजन-प्रार्थना करें। इन संतों के कारण हमें आशीर्वाद मिल गया... हमारी मंजिल पर हम आसानी से पहुंच कर, सबको ऐसा बल, बुद्धि, प्रेरणा, शक्ति दें, ऐसी प्रार्थना। तदोपरान्त **प.पू. भरतभाई** ने आशीर्वाद दिया—

...मनोजभाई की बातें जब मैं सुन रहा था तो लगता था कि 'इवनिंग विध मनोजभाई' रखनी चाहिए। गुणातीतानंदस्वामी के प्रागट्य पर्व के दिन आज स्वामीजी का दीक्षा महोत्सव है, दिनकरभाई का भी प्रागट्य पर्व है। तो ऐसे दिन के संदर्भ में एक शब्द हमेशा दिखाई देता है और वो है 'दासत्व!' गुणातीतानंदस्वामी का जीवन देखें, तो दासत्व की पराकाष्ठा। तरणेतरे के महंत आए, तब 80 वर्ष की आयु में गुणातीतानंदस्वामी झाड़ू लगा रहे थे। उन्होंने पूछा— यहाँ के महंत कहाँ हैं? गुणातीतानंदस्वामी ने कहा— आप सभागृह में बैठो, वो उधर ही आएंगे। फिर हाथ वगैरह धोकर गुणातीतानंदस्वामी वहाँ आये, तो तरणेतरे के महंत बोले— अरे, आप तो झाड़ू लगा रहे थे! **स्वामी ने कहा— हमारे यहाँ जो झाड़ू लगाये, वो महंत।**

हरिप्रसादस्वामीजी हमेशा बताते कि गुणातीत की भाषा, दासत्व की भाषा है और वो बोलने में नहीं, वर्तने में है।

ऐसे ही दिनकरभाई के जीवन में भी हमने देखा है— 'दासत्व भक्ति।' जब सांकरदा में काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव मना रहे थे, तब दिनकरभाई अमेरिका से बहुत सारे भक्तों को लेकर आए थे। उसमें बहुत ही ज्यादा उम्र की तरुबहन नाम की भक्त आई थीं। एक दिन रात को ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे वे बीमार हो गईं। उस समय उन्होंने कहा कि दिनकरभाई को बुलाओ। दिनकरभाई वहाँ सेवक के साथ गये और धुन करी। और तो और, रात को उनकी सेवा में कोई सत्संगी बहन रहे, ऐसी व्यवस्था करी और वे अच्छी हो गईं। उन्होंने दिनकरभाई से कहा कि मुझे उत्सव में जाना है, लेकिन मैं आपके साथ ही जाऊंगी। सो, दिनकरभाई गाड़ी में पीछे की सीट पर बैठ गए व उन्हें आगे बिठाया। **ये सेवकभाव-दासत्वभाव!**



गुणातीत की ये जो दासत्व भक्ति है, वो ऐसे गुणातीत संतों में हमें देखने को मिलती है।

स्वामीजी का दासत्व तो हम सब जानते ही हैं। कितने दासत्वभाव से उन्होंने जीवन जीया है! लाखों लोगों का उत्सव होगा, लेकिन भरी सभा में कोई भी भक्त स्वामीजी के पास जाता, तो उसके साथ बातें करते। स्वामीजी की वो दासत्वभक्ति है। स्वामीजी का युवकों के साथ दासत्व का प्रसंग है— ‘स्वामीजी कहीं बाहर जाने से पहले बाथरूम जा रहे थे, तो किसी ने कहा— दो मिनिट बात करनी है। पर, उसके साथ बात करने में आधा घंटा वे खड़े रहे। कैसी भक्ति होगी? ऐसे गुणातीत संतों की दासत्वभक्ति अद्भुत है।

आज जो दीक्षाविधि का कार्यक्रम हुआ, उसकी बात करता हूँ। हरेक सेंटर में शरदपूर्णिमा का उत्सव मनाते हैं। लेकिन, गुरुजी ने ये उत्सव यहाँ रख कर सभी स्वरूपों को इकट्ठा किया।

मुझे याद आता है कि जब अक्षरज्योति के नये भवन का उद्घाटन करना था, उस समय स्वामीजी शरदपूर्णिमा के दिन यहाँ आए थे। वर्ना स्वामीजी का शरदपूर्णिमा का उत्सव हरिधाम में अद्भुत होता है। पर, गुरुजी के बुलाने पर स्वामीजी आए थे। इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है। **जब ऐसे गुणातीत संत इकट्ठे होते हैं, तो उनकी वाइब्रेशन्स बहुत काम करती हैं।** आज सबको और जो साधु हुए हैं, सभी को लाइफ टाइम के लिये आध्यात्मिक भोजन मिल गया है। गुरुजी की दासत्वभक्ति है कि सब आने चाहिए। साहेबजी, प्रेमस्वामी, निर्मळस्वामी आने चाहिये और अमेरिका से दिनकरभाई आने चाहिए। इसके पीछे उनकी भावना ये है कि सब आएंगे, तो बहुत बड़ा काम होगा। आज भले ही शरदपूर्णिमा हम यहाँ मना रहे हैं, लेकिन इंटरनेशनली सब देख रहे हैं कि यहाँ सभी स्वरूपों के सान्निध्य में शरदपूर्णिमा मनाई जा रही है। ये वाइब्रेशन्स हमेशा-हमेशा हमारे साथ में रहने वाली है।

तो गुरुजी, साहेबजी, निर्मळस्वामीजी, दिनकरभाई, शांतिदादा, मनोजभाई, वशीभाई, आनंदी दीदी सभी संतों व बहनों के चरणों में प्रार्थना कि ऐसी दासत्वभक्ति से हम हमेशा ये जीवन जीएं। काकाजी कहते थे—

सच्चे सद्गुरु मिलना मुश्किल,

अगर मिल भी जाएँ तो उनके साथ रहना मुश्किल,

अगर साथ रहें भी तो स्वभाव टालकर उनके साथ जीना मुश्किल

और

वो भी करें, पर उनकी अनुवृत्ति के मुताबिक जीवन जीना मुश्किल,



वो भी करें, लेकिन अभिप्राय के अनुसार जीवन जीना मुश्किल,
अगर वो भी जीएं तो सुहृदभाव से दो-पांच जनों के साथ मिल-जुलकर रहना सबसे मुश्किल है
और इससे भी मुश्किल क्या?

कि 'ज्यां जुए त्यां रामजी, बीजुं न भासे रे'

ये बात मनोजभाई ने कही। तो इस अंतिम कक्षा पर ये गुणातीत संत हमें सहज में लेकर जाने वाले
हैं। हमें तो बस आनंद करो, भाई आनंद करो।

इन स्वरूपों के साथ हमेशा-हमेशा हम सब मिलकर सुहृदभाव से आनंद करते रहें यही प्रार्थना।

शरदपूर्णिमा निमित्त प.पू. दिनकर अंकल का प्राकट्य दिन भी मना रहे थे, सो पू. डॉ. दिव्यांग ने
उनका भजन — 'रज के दौलत दी, रज के दी खुशियाँ...' प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् दिल्ली के पुराने
जोगी पू. अनिल शर्माजी ने स्वयं गुरुहरि काकाजी महाराज का आर्ट वर्क बना कर, प.पू. दिनकर
अंकल को भेंट स्वरूप दिया। गुणातीत ज्योत से प.पू. हंसा दीदी ने प.पू. दिनकर अंकल के लिये
ख़ास हार भेजा था, तो गुणातीत ज्योत के प्रतिनिधि के रूप में पू. निलेशभाई ने उन्हें वह अर्पण
किया। पू. निलेशभाई का भी जन्मदिन था, सो पू. पुनीत गोयलजी ने हार अर्पण करके उनका
अभिवादन किया। तदोपरान्त प.पू. दिनकर अंकल ने आशिष वर्षा की —

आज सबसे बड़ा आनंद और आश्चर्य यह है कि दासस्वामी यहाँ पधार गए। सबको शायद पता नहीं
होगा कि तीन दिन पहले दासस्वामी हरिद्वार के मंदिर में दर्शन करके नीचे उतर रहे थे। मार्बल के
फ्लोर पर बारिश का पानी होगा, तो रेलिंग पर पांव फिसलने से उन्हें फ़ैक्चर हो गया। फिर
दासस्वामी का मेरे पास फोन आया और कहा कि आप मेरे लिये प्रार्थना करना कि मैं स्वामीजी के
अस्थि विसर्जन के लिये पहुँच जाऊँ। वे देहभाव से पर की बात बता रहे थे। पर, प्रेमस्वामी ने उनका
पांव थोड़ा ऊँचा किया, तो वे ज़ोर से चिल्लाये। तब ख्याल आया कि ये तो बहुत बड़ा फ़ैक्चर है।
हमारा जोधा इनको दिल्ली लेकर आये। दिल्ली में एक्सरे लिया तो एक घुटने में ऊपर का बोन टूट
गया था। दासस्वामी की तबियत जल्दी अच्छी हो जाए, उसके लिए एक मिनिट स्वामिनारायण...
धुन करते हैं।

आज शरदपूर्णिमा के दिन पर गुणातीतानंदस्वामी का 241वां प्राकट्य दिन और साथ में 1965 में
योगीजी महाराज ने पांच संतों—'हरिप्रसादस्वामीजी, प्रेमस्वामीजी, माधवजीवनस्वामीजी,
यज्ञप्रसादस्वामीजी और योगीप्रसादस्वामीजी' को भागवती दीक्षा दी थी, वो भी
स्मृति का दिन है। आज डॉ. मनोजभाई सोनी ने बहुत अच्छी तरह से समझाया कि
दिल्ली मंदिर में 'योगी सर्जनानंद पर्व' हो गया। तीन संतों की पार्षदी और



भागवदी दीक्षा का प्रसंग है... वैसे कोरोना के हिसाब से इस साल मेरा इंडिया आने का कोई प्लान नहीं था। पर जब स्वामीजी के अक्षरधामगमन का समाचार सुना, तो 2 घंटे में दूसरी वेक्सीनेशन ले ली। क्योंकि यहाँ डबल वेक्सीनेशन मांगते हैं। गुरुजी का भी दूसरा मैसेज आया कि तीन संतों को दीक्षा दे रहे हैं; दीक्षाविधि है। आप 18 तारीख तक आ जाओ, तो अच्छा है। तो ये भी गुरुजी की कृपा से हो गया। इस उत्सव में तो सब स्वरूपों और संतों के दर्शन हो गए... आज बहुत आनंद हो रहा है और साथ में गुरुजी के 85वें प्राकट्य पर्व- **‘साधु पर्व’** का भी ज़ाहिर हो गया, जिसके प्रतीक चिन्ह पर साहेब दादा ने साइन कर दिया है कि हम आने वाले हैं। हम तो आपके हैं, साइन करें या न करें आना ही है।

प.पू. दिनकर अंकल ने फिर **प.पू. दासस्वामीजी** से आशीष याचना की, तो प.पू. दासस्वामीजी ने भावुक हृदय से गुणातीत स्वरूपों से प्रार्थना की—

...स्वामीजी महाराज 26 जुलाई को दृष्टि अगोचर हुए। काकाजी और पप्पाजी महाराज की तरह स्वामीजी दृष्टि अगोचर होने पर भी अंतर अगोचर नहीं हो सकते। और... **गुरुजी ने आश्वासन पत्र में लिखा था—**

हरिधाम की कण-कण जब तक ब्रह्मरूप नहीं बनेगी, तब तक हरिप्रसादस्वामीजी महाराज अक्षरधाम नहीं जा सकते। वे दृष्टि अगोचर हुए, लेकिन साहेबजी, निर्मलस्वामीजी, गुरुजी, सुहृदस्वामी, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई सब वरिष्ठ हैं। तो सबसे मेरी यही प्रार्थना है और खास तो साहेबजी से कि—

1971 में योगीबापा अक्षरधामनिवासी हुए। उसके बाद में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और आप। स्वामीजी 26 जुलाई को स्वधाम गए। 20 जुलाई को मेरा जन्मदिन था। हरिधाम के सुहृदस्वामी जो स्वामीजी की सेवा में रहते थे, उन्होंने सुबह मुझे स्वामीजी का दर्शन करवाया और स्वामीजी को बताया कि आज दासस्वामी का जन्मदिन है। मैंने स्वामीजी से प्रार्थना की—

हे स्वामीजी! जैसे आपने योगीबापा का दिव्यभाव से सेवन किया वैसा मुझे आपका करना है। स्वामीजी ने तुरंत कहा— ‘हां, बराबर है, बराबर है।’

उस दिन मैं फिर आरती में गया था। तो, अशोकभाई और सुहृदस्वामी ने फोन पर पूछा कि दासस्वामी कहां हैं? उन्हें स्वामीजी के दर्शन कराने हैं। तब वे मुझे प्रदक्षिणा की साइड वाली गैलरी

में ले गये और बताया कि स्वामीजी दर्शन दे रहे हैं। स्वामीजी के दुर्लभ दर्शन हो गए। यूँ स्वामीजी ने मेरी प्रार्थना भी स्वीकारी, लेकिन एक शर्त दी है कि अंदर-अंदर सभी सुहृदभाव बढ़ाना। सभी में मतलब—पूरे गुणातीत समाज में। उसमें बी.ए.पी.एस



संस्था भी आ गई और सब आ गए। स्वामीजी ने बहुत बार कहा है कि हमें योगीबापा के अंतर में हाश कर देनी है और उनका ऋण चुकाना है। हे साहेबजी! हमें योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी का ऋण चुकाना है—ऐसा आशीर्वाद देना।

अकसर देखा गया है कि जब भी किसी उत्सव या सभा में वक्ताओं को माहात्म्यगान करने का मौका मिलता है, तो वे इतने भावविभोर होते हैं कि घड़ी की सुई को देखना ही नहीं भूल जाते हैं। लेकिन, हमें मिले गुणातीत स्वरूप तो पल-पल अपने जैस्वर्स से सूझ देते हैं कि समय की मर्यादा के अनुसार वर्तें।

पू. राकेशभाई ने जैसे ही एनाउन्स किया कि संतभगवंत साहेबजी के श्रीचरणों में प्रार्थना... तो वाक्य पूरा होने से पहले ही **संतभगवंत साहेबजी** ने घड़ी की ओर इशारा किया और प.पू. गुरुजी से आशीर्वाद लेने का संकेत दिया। तो, **प.पू. गुरुजी** ने भी समय की ओर इशारा करते हुए चंद वाक्यों में शरदपूर्णिमा का सार बता दिया—

...आज गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन। स्वामी को खूब-खूब धन्यवाद व आभार कि उन्होंने महाराज के साथ अवतरण लेकर हमें हमेशा के लिये सनाथ किया। पौषी पूर्णिमा पर आशीर्वाद देते हुए काकाजी ने एक बार कहा था— हम अखंड सौभाग्यवंता हैं। गुणातीत पुरुषों की परंपरा अखंडित और शाश्वत रहने वाली है, सनातन चलती रहेगी। इस रहस्य को समझ कर, ऐसे स्वरूपों की गोद में हम आनंद और ब्रह्मकल्लोल करते रहें, ऐसे साहेब आशीर्वाद दें।

जैसे कि प.पू. गुरुजी ने संतभगवंत साहेबजी से आशीष के लिये प्रार्थना की, तब संतभगवंत साहेबजी ने जिस प्रकार अपने दोनों हाथों ऊपर किये, उससे उनमें गुरुहरि योगीजी महाराज का सहज दर्शन हो गया। क्योंकि प.पू. बापा के सूत्र— **भगवान सहनुं भलुं करो...** (भगवान सबका भला करो) के साथ आशीर्वाद देती बापा की मूर्ति गुरुहरि काकाजी को भी खूब पसंद थी!

तत्पश्चात् सभी स्वरूपों, वडील संतों एवं हरिभक्तों ने शरदपूर्णिमा की आरती संपन्न की।

आरती के बाद **पू. प्रमीतभाई संघवी** ने सभी की ओर से **प.पू. दिनकर अंकल** को हार अर्पण किया। अक्षरज्योति की बहनों ने मोर की कलरस्कीम का केक बनाया था। पाश्चात्य संस्कृति के अनुरूप केक को चाकू से काटा जाता है। परंतु, काफ़ी समय से **संतभगवंत साहेबजी** एक संदेश दे रहे हैं— **हम काटने वाले नहीं, बल्कि जोड़ने वाले हैं।**

सो, उनके इस वचन को ध्यान में रखते हुए, चाकू का प्रयोग न करके चम्मच से कटोरी में केक रख कर श्री ठाकुरजी को धराने के बाद स्वरूपों ने प्रसाद ग्रहण किया।



अंत में आनंद-कल्लोल करते हुए दीक्षाविधि निमित्त आयोजित दो दिन की शिविर का समापन हुआ।

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी तो हरिधाम में शरदपूर्णिमा का उत्सव होने के कारण 20 की सायं फ्लाईट से गुजरात चले गये थे। **संतभगवंत साहेबजी** 21 की सुबह नोएडा में **पू. वालिया साहेब** के घर पधरामनी करने के बाद सायं की फ्लाईट से गुजरात जाने वाले थे। लेकिन, प.पू. दीदी की प्रार्थना स्वीकार करके संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. दिनकर अंकल, प. पू. शांतिभाई साहेब, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. बापुस्वामीजी, प.पू. विज्ञानस्वामीजी एवं अन्य संतों-मुक्तों के साथ अक्षरज्योति को पावन करने सुबह करीब 11 बजे पधारे।

भगवान स्वामिनारायण एवं उनकी गुणातीत परंपरा के संतों के प्रसंगों से भक्तों के समर्पण की जानकारी मिलती है। पर, इस दिन तो संतभगवंत साहेबजी के प्रति पू. वालिया साहेब एवं उनके परिवार के अतिशय प्रेम का हुबहू दर्शन हुआ। जब प.पू. दीदी ने पू. वालिया साहेब से कहा कि संतभगवंत साहेबजी आपके यहाँ न आकर अक्षरज्योति आयें? तो प.पू. दीदी के सुझाव पर वे श्री ठाकुरजी के थाल के लिये घर से व्यंजन बना कर लाये। यँ अक्षरज्योति में छोटा उत्सव हो गया। दोपहर दो बजे के करीब संतभगवंत साहेबजी गुजरात जाने एयरपोर्ट के लिये रवाना हुए। सरप्राइज़ में प.पू. गुरुजी पीछे-पीछे उन्हें विदा करने एयरपोर्ट पहुँचे। थोड़े-थोड़े अंतराल पर आये सभी स्वरूप एवं मुक्त अपने गंतव्य स्थान पर लौट गये।

ऑपरेशन होने के कारण **प.पू. दासस्वामीजी** मंदिर में ही ठहरे। सुबह-शाम प.पू. गुरुजी एवं वे साथ बैठ कर पुराने संस्मरणों से आनंद करते।

दीक्षाविधि के अद्भुत प्रसंग निमित्त अक्तुबर का पूरा महीना आनंदोद्ब्रह्म करते हुए बीता कि तुरंत ही **दीवाली** एवं **अन्नकूटोत्सव** भी दस्तक देते हुए आ गया। कोविड की पाबंदी को ध्यान में रखते हुए एक साल के बाद **प.पू. गुरुजी की निश्रा में 2 नवंबर-धनत्रयोदशी और 4 नवंबर-दीवाली निमित्त महापूजा एवं 5 नवंबर को अन्नकूट आरती संपन्न हुई** और... प्रति वर्ष की भाँति **15 नवंबर-प्रबोधिनी एकादशी** के मंगलकारी दिन सायं **शाकोत्सव** का आयोजन हुआ। प.पू. गुरुजी ने **‘काकाजी दी मंडी’** नाम दिया, जिसका उद्घाटन **प.पू. दासस्वामीजी** के वरद हस्तों से करवाया।

तबियत में सुधार होने पर, **20 नवंबर** की सायं फ्लाईट से **प.पू. दासस्वामीजी हरिधाम के लिये रवाना हुए।** उन्हें विदा करने **प.पू. गुरुजी भक्तों के साथ एयरपोर्ट गये।** अक्तुबर-नवंबर के दो महीने कहाँ बीत गये ख्याल ही नहीं पड़ा और दिव्य स्मृतियों की सौगात से दिल्ली मंदिर के मुक्तों का अंतर पुलकित हो उठा...





21 अक्टुबर 2021 सुबह



अक्षरज्योति भवन को यावन करने आये गुणातीत संत...





हम सब पुण्यशाली आत्माएँ हैं, जिन्हें प्रभु प्रगट मिले हैं...

- प.पू. शांतिभाई साहेब





2 नवंबर 2021



प.पू. दासस्वामीजी के सान्निध्य में धनत्रयोदशी की महापूजा



4 नवंबर - दीवाली निमित्त शारदा पूजन





5 नवंबर 2021-अन्नकूटोत्सव



प्रभु मेरे जीमने आये, प्रीतम को क्या-क्या भाये रे...



अन्नकूट आरती एवं प्रसाद वितरण



15 नवंबर 2021- शाकोत्सव



प.पू. दासस्वामीजी द्वारा उद्घाटन





धाम के मालिक धरती ऊपर, आये हैं स्मृतियाँ देने...





Bhaav Samadhi

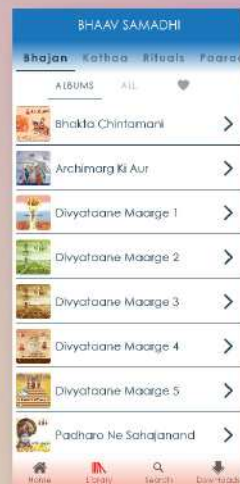


APSM

Install Our Mobile Applications Bhaav Samadhi - APSM

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun
Mahapooja Shlok
Vachanamrut, Swamini Vato
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings
P.P. Guruji's Blessings



This app contains...

Calender, Murti Darshan,
Function Photo & Video
Mandir Books
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)
Powai (Snehal Sindhu)



Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on **WhatsApp**.

Those who are not getting please save this number
7011521488

Save the above number by name –

Our Temple Updates

After saving, please send Jay Swaminarayan message

on the above number and mention your name also.

Thanks!

आप में से अधिकांश मुक्त **WhatsApp** द्वारा मंदिर में होते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग सभाओं की सूचना प्राप्त करते होंगे।

यदि किसी की ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया

7011521488

नंबर को **Our Temple Updates** के नाम से **save** कर लें

और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर

जय स्वामिनारायण का संदेश भेज दें।

धन्यवाद!



व्रतीत्सवसूची

- (1) दि.30.12.'21, गुरुवार — एकादशी, व्रत
- (2) दि.31.12.'21, शुक्रवार — प.पू. गुरुजी की निश्रा में रात्रि 10:00 बजे मध्यरात्रि महापूजा
- (3) दि.13.1.'22, गुरुवार — एकादशी, व्रत
लोहड़ी, प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य दिन
- (4) दि.14.1.'22, शुक्रवार — मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
- (5) दि.17.1.'22, सोमवार — पौषी पूर्णिमा,
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का दीक्षा दिन
अनुपम मिशन-नवनिर्मित मंदिर में स्वर्ण कलश की स्थापना
- (6) दि.23.1.'22, रविवार — ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
- (7) दि.26.1.'22, बुधवार — प्रजासत्ताक दिन
- (8) दि.28.1.'22, शुक्रवार — एकादशी, व्रत
- (9) दि. 3.2.'22, गुरुवार — गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव
- (10) दि. 5.2.'22, शनिवार — बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती,
सद्. निष्कुलानंदस्वामीजी, सद्. ब्रह्मानंदस्वामीजी
एवं गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती
- (11) दि.15.2.'22, मंगलवार — ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी की जयंती

R.N.I. 28971/77 (Air Mail)

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor : **SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A- 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI- 110 052**